SUNDAY रिपोर्टर

OFF THE BEAT

जोधपुर 4 मई 2025

वर्षः 13 अंकः 52

मूल्यः 10 पृष्ठः 20

www.facebook.com/sundayreporter

Approved By Government of India

Email: sundayreporter123@gmail.com

‘130 परमाणु हथियारों का...

डॉ. सुरेश खटनावलिया

SUNDAY रिपोर्टर

ब्रांडेड जेनरिक मेडिसिन में मुनाफाखोरी का काला कारोबार

जोधपुर। ब्रांडेड जेनरिक (प्रोपेगेंडा) मेडिसिन के जरिये कम समय में अरबपति बनने के लिए मुनाफाखोरी का कारोबार इतना गहरा हो चुका है कि ऐसी एक-एक दवा और सर्जिकल आइटमों पर 100 से 6 हजार प्रतिशत तक मुनाफा कमाया जा रहा है। मुनाफाखोर कैंसर, किडनी, न्यूरो, हॉर्ट, फेफड़े, लिवर जैसी गंभीर बीमारियों में भी मनमानी वसूली से नहीं चूक रहे।

संडे रिपोर्टर ने काले कारोबार की सच्चाई जानने के लिए एक महीने तक दवा बाजार से कई दवाओं के खरीद और बिक्री बिल खंगाले तो यह खुलासा हुआ। मुनाफे के इस बाजार में अब ब्रांडेड दवा कंपनियां भी उतर चुकी हैं। अकेले राजस्थान में एक वर्ष में करीब 20 हजार करोड़ का निजी दवा बाजार माना जाता है। देश में यह करीब 4 लाख करोड़ रुपये है।

मरीज से सर्वाधिक लूट

इस तरह की दवाओं में निर्माता से सीएंडएफ, डिस्ट्रीब्यूटर और स्टॉकिस्ट के पास होते हुए रिटेलर तक कीमत कई गुना हो जाती है। यानि 13 रुपये की खरीद वाली दवा रिटेलर तक करीब 50 रुपये की हो जाती है। इसके बाद रिटेलर और कमीशन का पैसा बंटता है। अंत में सबसे ज्यादा पैसा मरीज से लूटा जाता है। 13 रुपये की दवा पर एमआरपी 500 रुपये तक या इससे भी अंकित कर दी जाती है। इसमें मरीज को डिस्काउंट देकर भी कई सौ या हजार प्रतिशत मार्जिन ले लिया जाता है।

प्रोपेगेंडा में ही बड़ा काला बाजार

प्रोपेगेंडा ब्रांडेड जेनरिक मेडिसिन दवा बाजार में सबसे ज्यादा कमाई वाली मेडिसिन मानी जाती है। इसमें कोई भी व्यक्ति अपने नाम से दवा के ब्रांड नेम का पंजीकरण करवाता है। फिर उस सॉल्ट को दवा निर्माता से खरीदकर अपना लेबल लगवाकर मनमानी एमआरपी अंकित करवाता है। सॉल्ट की खरीद दर काफी कम होती है। इसके बाद वह अपने ब्रांड की मार्केटिंग करता है।

▶ एक-एक दवा और सर्जिकल आइटमों पर 100 से 6000% तक कमाया जा रहा मुनाफा

▶ अकेले राजस्थान में एक वर्ष में करीब 20 हजार करोड़ का निजी दवा बाजार, देश में यह करीब 4 लाख करोड़ रुपये का बाजार

क्या है दवाओं में

- **मोंटास एफएक्स टेबलेट**
जेनरिक मेडिसिन के साल्ट : मोंटेलुकास्ट (10 एमजी) विद् फेक्सोफेनाडाइन (120 एमजी)
- **मोंटास एल**
मोंटेलुकास्ट (10 एमजी)
- **कॉफ्रिल सिरप 100 एमएल**
डिपेनहाइड्रामिन (14.08एमजी-5एमएल) विद अमोनियम क्लोराइड (138एमजी-5एमएल) विद सोडियम सिट्रेट (57.03एमजी-5एमएल)
- **सिपकाल एक्सटी टेबलेट**
कैल्सियम काबोर्नेट (1250एमजी) विद विटामिन डी3 (2000आईयू) विद मिथाइलकोबालामिन (1500एमसीक्यू) विद मिथाइल फोलेट कैल्सियम (1 एमजी) विद पाइरिडोक्स-5 फोस्फेट (20 एमजी)
- **टॉपैक एसपी प्लस टेबलेट**
डाईक्लोफेनाक (एनए) विद पैरासिटामोल (एनए) विद सेराटियोपेप्टिडेज (एनए)
- **पैंटोसेक डीएसआर कैप्सूल**
पैंटोप्राजोल
- **रोसुफिन 10 टेबलेट**
रोसुवास्टेटिन
- **मेडिकैथः** सर्जिकल
- **यूरोबैगः** सर्जिकल
- **सीरिंज 10 एमएल, 5 एमएलः** सर्जिकल

अधिकतम कीमत तय करके रोकी जा सकती मुनाफाखोरी

“ पूरे बाजार को भारी मुनाफाखोरी का कारोबार नहीं कहा जा सकता। अधिकांश कारोबारी उचित मुनाफे पर ही काम कर रहे हैं। जहां तक प्रोपेगेंडा या ब्रांडेड जेनरिक मेडिसिन का सवाल है तो यह सरकार की नीति का ही हिस्सा है। इन दवाइयों की बिक्री और निर्माण अवैध नहीं है। इनमें मुनाफाखोरी को इनकी अधिकतम कीमतें तय करके रोका जा सकता है।

\- शैलेन्द्र भार्गव, दवा कारोबारी

इधर, 100 रुपये की एक दवाई पर 1000% का प्रॉफिट मार्जिन

सबसे ज्यादा महंगी दवाइयों में सबसे ऊंचा ट्रेड मार्जिन होता है। नेशनल फार्मास्युटिकल प्राइसिंग एजेंसी द्वारा किए गए एनालिसिस में सामने आया है कि खासतौर पर उन दवाइयों में मार्जिन ज्यादा है, जिनकी कीमत प्रति टैबलेट 100 रुपये के ऊपर है। 100 रुपये की एक दवाई पर व्यापारियों को मिलता है 1000% का प्रॉफिट मार्जिन, रिपोर्ट में हुआ चौंकाने वाला खुलासा सबसे ज्यादा महंगी दवाइयों में सबसे ऊंचा ट्रेड मार्जिन होता है। वहीं, ट्रेड मार्जिन रेशनलाइजेशन कीमतों के रेगुलेशन का एक माध्यम है, जिसमें सप्लाई चैन में ट्रेड मार्जिन की सीमा तय की जाती है।

क्या होता है ट्रेड मार्जिन?

ट्रेड मार्जिन विनिमार्ताओं के लिए मौजूद कीमत और मरीजों के लिए मौजूद दाम यानी मैक्सिमम रिटेल प्राइस के बीच का अंतर होता है। रेगुलेटर द्वारा ळटफएनालिसिस पर पेश की गई प्रेजेंटेशन के मुताबिक, टैबलेट की कीमत के साथ ट्रेडर का मार्जिन बढ़ता है. उदाहरण के लिए, अगर टैबलेट की कीमत दो रुपये तक होती है, तो, ज्यादातर ब्रांड्स में मार्जिन 50 फीसदी तक का होगा। जबकि, अगर उसकी कीमत 15 रुपये से 25 रुपये के बीच है, जो मार्जिन 40 फीसदी से कम रहेगा। 50 से 100 रुपये प्रति टैबलेट कैटेगरी में मौजूद दवाइयों में कम से कम 2.97 फीसदी का ट्रेड मार्जिन 50 फीसदी और 100 फीसदी के बीच होता है। जबकि, इस कैटेगरी में 1.25 फीसदी का मार्जिन 100 से 200 फीसदी का होता है। वहीं, 2.41 फीसदी दवाइयों का मार्जिन 200 फीसदी और 500 फीसदी के बीच रहता है।

नॉन-शेड्यूल्ड ड्रग का सालाना टर्नओवर 1.37 लाख करोड़ रुपये

एनपीपीए की प्रेजेंटेशन के मुताबिक, 100 रुपये प्रति टेबलेट से ज्यादा कीमत वाली दवाइयों के मामले में, सबसे ज्यादा महंगी कैटेगरी को देखते हुए, 8 फीसदी का मार्जिन 200 फीसदी से 500 फीसदी के बीच होता है। वहीं, 2.7 फीसदी दवाइयों का मार्जिन 500 से 1000 फीसदी के बीच रहता है। जबकि, 1.48 फीसदी दवाइयों का मार्जिन 1000 फीसदी से ज्यादा होता है। प्रेजेंटेशन में दिखता है कि भारत में नॉन-शेड्यूल्ड ड्रग का सालाना टर्नओवर 1.37 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का है। यह भारत के फार्मा बाजार का करीब 81 फीसदी है। तो मार्जिन को सीमित करने की जरूरत और ज्यादा है।

Content / Design / PR / Print / Digital / Outdoor / Event

a. abhishek media group

GROW YOUR BUSINESS & RELATIONS WITH US

★ हार्दिक बधाई ★ शुभकामनाएं
★ शोक संदेश ★ श्रद्धांजलि
★ क्लासिफाईड ★ आम सूचना
★ कॉमर्शियल ★ अपॉईंटमेन्ट

•Print •Digital •Electronic
•Social Media •Events
•Outdoor Publicity
•Public & Business Relation
•Business Branding & Strategy

Free Home
(Whastsapp)
Service is available
+91 7239965000

We Deal With

दैनिक भास्कर
राजस्थान पत्रिका
दैनिक नवज्योति
नफा नुकसान
THE TIMES OF INDIA
NEWS 18 राजस्थान
CNBC आवाज़
Z राजस्थान NEWS

GUARANTEE
BEST DEAL

Abhishek Jain +91 9829005820
abhishekjain.reporter@gmail.com
E-123, Basement Sudershan Complex, Kalpataru Shoping Centre, Residency Road, Jodhpur

कुंठा से क्राइम की ओर

अपराध अब सिर्फ एक गलती नहीं, बल्कि मानसिक बदलाव का बनता जा रहा नतीजा

18 से 30 साल के युवाओं में हो रहा क्रिमिनल माइंडसेट ट्रांसफॉर्मेशन

4 साल में क्रिमिनल माइंडसेट ट्रांसफॉर्मेशन

तेजी से अमीर बनने, प्यार में रिजेक्शन, खुद को साबित करने की होड़, समाज के दबाव से पनप रही कुंठा

नेशनल मेंटल हेल्थ प्रोग्राम की रिपोर्ट में हुआ खुलासा

40 प्रतिशत मामलों में बीते चार साल में हुई बढ़ोतरी

केस 1: लड़की को ब्लैकमेल किया

एक 22 वर्षीय युवक ने अपनी कॉलेज की एक दोस्त को प्रपोज किया, लेकिन लड़की ने उसका प्रपोजल रिजेक्ट कर दिया। इनकार युवक को चुभ गया। उसके मन में बदले की भावना बैठ गई। इंटरनेट पर बदला कैसे लिया जाए सर्च करने लगा। उसने लड़की को ब्लैकमेल करना शुरू कर दिया।

केस-2 : ऑनलाइन ठगी करने लगा

अपने दोस्तों को देख 21 वर्षीय रोहन को महंगे कपड़े, जूते, लग्जरी लाइफ जीने का चस्का लग गया। मिडिल क्लास होने की वजह से उसे लगने लगा कि उसकी कोई इज्जत नहीं है। कुछ दोस्तों के साथ मिलकर उसने एक ग्रुप बनाया और ऑनलाइन ठगी करने लगा।

जोधपुर। सोशल मीडिया पर खुद को साबित करने की होड़, तेजी से अमीर बनने की चाहत, प्यार में रिजेक्शन का गुस्सा और समाज के दबाव में पनपती कुंठा, यही वो कारण हैं, जो यूथ के दिमाग में अपराध की चिंगारी भड़का रहे हैं। अब अपराध गुस्से में उठाया गया कदम नहीं, बल्कि एक मेंटल प्रोसेस बन गया है। मेंटल हेल्थ प्रोग्राम की एक हालिया रिपोर्ट में यह चौंकाने वाला खुलासा हुआ है। इसके मुताबिक बीते चार सालों में ही 18 से 30 साल के युवाओं में क्रिमिनल माइंडसेट ट्रांसफॉर्मेशन के मामलों में 40 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। एक्सपर्ट्स का कहना है कि अपराध अब सिर्फ एक गलती नहीं, बल्कि मानसिक बदलाव का नतीजा बनता जा रहा है।

SUNDAY रिपोर्टर

ये है रिपोर्ट

नेशनल मेंटल हेल्थ प्रोग्राम के तहत जारी गोपनीय रिपोर्ट के मुताबिक बीते चार साल में 46852 युवाओं पर स्टडी की गई। 13 से 35 साल के इन लोगों में अग्रेशन की समस्या मिली। अलग-अलग सोर्सेज से ये काउंसलिंग के लिए पहुंचे थे। इनमें से 56 प्रतिशत लोगों के मन में किसी न किसी बात को लेकर रिजेक्शन का गुस्सा था। जिसके चलते इनके मन में अपराध की भावना पनप गई थी। वहीं 29 प्रतिशत ऐसे रहे जो जल्दी अमीर होना चाहते थे। इनमें सोशल मीडिया और दिखावे की होड़ मिली। ये इंस्टाग्राम, फेसबुक और यूट्यूब पर दिखाए जाने वाले फेक लाइफस्टाइल को असली मान रहे थे और उसे पाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार मिले। मेहनत करने के बजाय ये जल्दी अमीर बनने का शॉर्टकट ढूंढ रहे थे। 15 प्रतिशत ऐसे थे जो बुरी संगत और गैंग कल्चर से प्रभावित थे। ये अपराध को ग्लैमराइज कर रहे थे।

ये है क्रिमिनल माइंडसेट ट्रांसफॉर्मेशन

- क्रिमिनल माइंडसेट ट्रांसफॉर्मेशन स्लो लेकिन खतरनाक प्रोसेस है
- इसमें कोई व्यक्ति, धीरे-धीरे अपराध को अपनी समस्याओं का एकमात्र हल मानने लगता है।
- यह एक मेंटल और इमोशन लचेंज है जिसमें व्यक्ति को अपराध करना गलत नहीं लगता।

क्रिमिनल माइंडसेट ट्रांसफॉर्मेशन के लक्षण

- गुस्से पर काबू न रहना
- समाज से कटाव, असफलता या रिजेक्शन को अपमान मानना, बदला लेने की सोच रखना
- अपराध को सही ठहराना
- सोशल मीडिया का असली जिंदगी पर असर, इंटरनेट और फिल्मों से अपराध से जुड़े आइडियाज लेना
- अचानक व्यवहार में बदलाव,अचानक आक्रामक हो जाना, शॉर्टकट तरीकों पर ध्यान देना

इनका है कहना..

अपराध को अब ग्लैमराइज किया जाने लगा है। खासतौर से वेबसीरीज, फिल्मों को देख यूथ इनसे प्रभावित हो रहा है। उन्हें लगता है कि अपराधी कूल होते हैं। ऐसा माइंडसेट उनका भी बन जाता है। अधिकतर यूथ में इस तरह की मानसिकता डेवलप हो रही है।

-डॉ. विभा नागर
नोडल, मेंटल हेल्थ प्रोग्राम

क्रिमिनल माइंडसेट अचानक नहीं बनता, बल्कि यह धीरे-धीरे विकसित होता है। अपनी हसरत या इच्छाओं को पूरा करने के लिए वह किसी भी हद तक जा सकते हैं। अगर युवाओं के व्यवहार में अचानक बदलाव दिखे, तो परिवार और दोस्तों को सतर्क हो जाना चाहिए।

-डॉ. श्वेता पारीक
साइकोलॉजिस्ट

यूथ की अपनी एक दुनिया होती है। उनमें अत्यधिक महत्वाकांक्षाएं हैं। वह असफलता को स्वीकार नहीं कर पाते। वह खुद को अपराध की ओर धकेल रहा है। स्कूल-कॉलेजों में काउंसलिंग जरूरी है, ताकि सही समय पर उनकी मानसिकता को समझा जा सके और उसमें बदलाव लाया जा सके।

-डॉ. सोना गुप्ता
सोशल बिहेवियर एक्सपर्ट

गंदे वीडियो देखने वाला भाई ही निकला हत्यारा

जोधपुर। गुरुकुल में रहने वाले 7 साल के मासूम सव्य सांची की चाकुओं से गोदकर निर्मम हत्या कर दी गई थी। हत्या करने के बाद सव्य की लाश को गुरुकुल के पास बने खेत में फेंक दिया था। पुलिस ने सव्य की हत्या के मामले में हर एंगल की जांच करने के बाद गुरुकुल के आचार्य और सव्य के मौसेरे भाई सौरभ को हिरासत में लेकर पूछताछ की। पुलिस की सख्ती के आगे सौरभ टूट गया। उसने सव्य की हत्या करना कबूल कर लिया। सौरभ ने सव्य की हत्या 3 जुलाई की रात को ही कर दी थी। हत्या करने के बाद सव्य की लाश को रात में ही बाथरूम के पास लाकर बाड़ के ऊपर से पास के खेत में फेंक दिया।

SUNDAY रिपोर्टर

पोर्न देखने का आदी: सौरभ ने बताया कि वह पोर्न देखने के आदी था। पोर्न देखने के बाद वह आश्रम में ही रहने वाले एक बच्चे से कुकर्म करता था। वह उस बच्चे को आश्रम में हर तरह से सुविधा देता था। जिसके कारण वह बच्चा उसका विरोध नहीं करता था। सौरभ का ये घिनौना खेल लंबे समय से चल रहा था। इसके बावजूद किसी को सौरभ पर कभी भी शक नहीं हुआ। 3 जुलाई की रात को सौरभ हमेशा की तरह आश्रम के उसी 14 साल के बच्चे के साथ कुकर्म कर रहा था। उस दौरान सव्य की नींद खुल गई। सव्य ने सौरभ और उस 14 साल के बच्चे को आपत्तिजनक हालत में देख लिया। जिसके बाद सौरभ को अपना राज खुलने का डर सताने लगा। सौरभ को अपनी प्रतिष्ठा बचाने का एक ही तरीका लगा-सव्य की हत्या।

धोती से मुंह बंद किया, चाकू से गोदा: सौरभ ने बताया कि वह और नाबालिग सव्य को पहले आश्रम भवन की छत पर लेकर गए। वहां उसका मुंह बंद कर उसके सिर पर चाकू से हमला किया। उसके बाद उसकी धोती और रस्सी से उसका गला घोंटकर हत्या कर दी। आश्रम के भवन से सव्य की लाश को वह बाथरूम के पास लेकर आए। वहां उसके सिर पर पत्थर और मिट्टी के ढेलों से बार बार हमला किया। मरने की पुष्टि होने के बाद सव्य की लाश को पास के खेत में फेंक दिया।

दोपहर में गायब होने की बात सौरभ व नाबालिग ने फैलाई: सव्य के 4 जुलाई के गायब होने की बात सौरभ और नाबालिग ने ही फैलाई थी। नाबालिग ने ही आश्रम के बच्चों को बताया कि सव्य ने दोपहर में पपीता खाया और बाद में बाथरूम की तरफ चाकू धोने के लिए गया था। उसके बाद सव्य नजर नहीं आया। सौरभ और उस नाबालिग का ये झूठ ही मर्डर मिस्ट्री को सॉल्व करने में मददगार साबित हुआ।आश्रम के दूसरे बच्चे ने बताया कि 4 जुलाई की सुबह सौरभ और उस नाबालिग ने आश्रम के अन्य 15 बच्चों को एकत्रित किया। उन्हें डराया धमकाया और सव्य के आश्रम से गायब होने की झूठी कहानी पुलिस को बताने के लिए मजबूर किया।

कीमतों से समझौता नहीं, समझदारी दिखाएं

जोधपुर। मार्केट में आजकल गोल्ड के दाम रोज नए हाईप पर जा रहे हैं। लोग सोचते हैं कि अब सोना खरीदना महंगा सौदा है, लेकिन एक्सपर्ट्स मानते हैं कि भले ही कीमतें बढ़ रही हों, लेकिन गोल्ड एक ऐसा इन्वेस्टमेंट है जो कभी नुकसान नहीं देता।

SUNDAY रिपोर्टर

हमारे देश में सोना सिर्फ एक धातु नहीं है, ये एक इमोशन, एक परंपरा और फाइनेंशियल सिक्योरिटी का सिंबल है। शादियों, त्योहारों और खास मौकों पर इसका होना जरूरी सा बन गया है। एक बार जो सोना खरीदा जाता है, वो सिर्फ आज का नहीं होता, बल्कि आने वाली जेनरेशन तक चलता है। यही वजह है कि लोग इसे महंगे रेट पर भी खरीदना एक समझदारी मानते हैं, क्योंकि इसमें लॉन्ग टर्म फायदा तय होता है।

लोग स्मार्ट तरीके से कर रहे हैं सोने में निवेश

मंथली जमा कराते हैं पैसा

ई गोल्ड में निवेश करने वालों की संख्या में भी तेजी से हो रहा है इजाफा

स्मार्ट और लचीला तरीका

अब एक और तरीका जो लोगों के बीच तेजी से पॉपुलर हो रहा है, वह है शेयर बाजार के जरिए गोल्ड में निवेश करना। इसमें आप किसी ब्रोकर के माध्यम से एक अकाउंट खोलते हैं और उसे फंड करते हैं। फिर आप उस दिन के गोल्ड रेट के हिसाब से सोना बुक कर लेते हैं। जब रेट बढ़ते हैं, तो आप सोने को बेच सकते हैं और मुनाफा कमा सकते हैं। जब रेट घटते हैं, तो आप फिर से सस्ता सोना खरीद सकते हैं। यह तरीका उन लोगों के लिए है जो रोजाना सोने के रेट पर नजर रखते हैं और निवेश को सक्रिय रूप से मैनेज करना चाहते हैं।

आज की कीमत, कल की डिलिवरी

अगर आप सोने का कोई गहना खरीदने का सोच रहे हैं, लेकिन डर है कि भविष्य में रेट और बढ़ सकते हैं, तो रेट बुकिंग एक बेहतरीन तरीका है। इसमें आप आज के रेट पर सोना बुक कर सकते हैं और तय समय पर गोल्ड ले सकते हैं, भले ही उस समय सोने के रेट बढ़ जाएं। इस तरीके से आप भविष्य में होने वाली महंगाई से बच सकते हैं और अपनी खरीदारी के लिए पहले से ही योजना बना सकते हैं। यह खासकर उन लोगों के लिए एक अच्छा ऑप्शन है जो शादी, त्यौहार या अन्य बड़े इवेंट्स के लिए गोल्ड खरीदना चाहते हैं।

स्मार्ट इन्वेस्टमेंट के रूप में सोना

सोना हमेशा से एक सुरक्षित और स्थिर निवेश का रूप माना गया है, और आज के बदलते आर्थिक हालात में इसका महत्व और भी बढ़ गया है। आजकल, जब गोल्ड की कीमतें लगातार बढ़ रही हैं, बहुत से लोग सोचते हैं कि अब सोना खरीदने का समय नहीं है। लेकिन विशेषज्ञों का मानना है कि सोना एक ऐसा निवेश है, जो न केवल सुरक्षित रहता है, बल्कि समय के साथ इसके दाम भी बढ़ते जाते हैं। चाहे आप इसे अपने परिवार की परंपरा को बढ़ाने के लिए खरीदें या भविष्य में एक सिक्योरिटी के तौर पर, सोना हमेशा एक बेहतरीन विकल्प रहता है।

भावनाओं से जुड़ा निवेश

भारत में सोना सिर्फ एक गहना नहीं होता, यह हमारे समाज की परंपरा और रिश्तों से भी गहरे तौर पर जुड़ा होता है। चाहे त्योहार हो, शादी हो या कोई खास मौका, सोने की खरीदारी हमारे परिवारों में हमेशा से एक अहम हिस्सा रही है। सोने का हर गहना न केवल एक आभूषण होता है, बल्कि यह हमारे परिवार के अतीत और भविष्य का प्रतीक भी होता है। समय के साथ सोने का मूल्य बढ़ता है, और यही कारण है कि इसे एक समझदारी से किया गया निवेश माना जाता है। सोना न केवल आज के लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक मजबूत वित्तीय सुरक्षा बन सकता है।

मंथली स्कीम से ग्राहकों को फायदा

अगर आप सोने में निवेश करने का सोच रहे हैं, लेकिन एक साथ बड़ी रकम खर्च नहीं करना चाहते, तो मंथली स्कीम्स एक बेहतरीन ऑप्शन हो सकती हैं। ज्वेलरी शॉप्स पर मंथली स्कीम्स होती हैं, जिसमें आप हर महीने एक तय राशि जमा करते हैं। आम तौर पर 11 महीने तक आप पैसे जमा करते हैं, और 12वें महीने में आपको बोनस के साथ गोल्ड खरीदने का मौका मिलता है। इस तरह से आप धीरे-धीरे सोने में निवेश कर सकते हैं और बड़े खर्चे से बच सकते हैं। खासकर वो लोग, जो एक साथ बड़ी रकम खर्च नहीं करना चाहते, इस स्कीम का फायदा उठा सकते हैं।

इनका कहना है...

सोना एक सुरक्षित निवेश है। चाहे मार्केट में उतार-चढ़ाव हो, सोने की कीमत समय के साथ बढ़ती है। मंथली स्कीम्स और शेयर बाजार के जरिए भी आप इसे एक स्मार्ट तरीके से निवेश बना सकते हैं।

-मुकेश बंसल, फाइनेंशियल कंसल्टेंट

मेरे कई क्लाइंट्स रोजाना सोने में ट्रेड करते हैं। वो एक तय अमाउंट जमा करते हैं, उस दिन के रेट पर सोना खरीदते हैं और सही वक्त पर बेचते हैं। ये तरीका उन्हें लगातार मुनाफा देता है।

सौरभ राठी, सुरेश राठी सिक्युटरीज

पुराने सोने से नया 'स्वैग'

एक ग्राम ज्वैलरी से लेकर रिसाइकल्ड डिजाइंस तक

जोधपुर। सोने के दाम तेजी से चढ़ रहे हैं, लेकिन शौक और स्टाइल कहां रुकते हैं? आज के दौर में ज्वैलरी सिर्फ इन्वेस्टमेंट नहीं, एक स्टेटमेंट है और यही वजह है कि लोग अब रियल गोल्ड की जगह स्मार्ट ऑप्शन्स की ओर बढ़ रहे हैं। एक ग्राम गोल्ड ज्वैलरी, हाई पॉलिश इमिटेशन, कुंदन डिजाइंस और पुराना सोना रिसाइकल करवाकर नया बनवाना ये सब आज के कंज्यूमर के पास अफोर्डेबल और ट्रेंडी विकल्प हैं। सिर्फ 1000 रुपये से शुरू होकर 5 लाख तक की वैरायटी में मिलने वाली ये ज्वैलरी मिडिल क्लास की जरूरत और फैशन सेंस दोनों को पूरा करती है। यानी सोने वाला लुक, बिना सोने का प्राइस टैग। यही है आज का नया गोल्ड ट्रेंड।

SUNDAY रिपोर्टर

हर जेब के लिए स्टाइल मिडिल क्लास की जरूरत और फैशन सेंस दोनों को करती है पूरा

नया फैशन, पुराने सोने से

बहुत सारे लोग अब अपने पुराने गोल्ड को रिसाइकल करवा रहे है। यानी उसी सोने को नई डिजाइनों में ढलवाकर दोबारा ट्रेंडी ज्वैलरी बनवा रहे हैं। इसमें सोने की 100 फीसदी वैल्यू मिलती है, बस मेकिंग चार्जेस देने होते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि पुराने टाइम में सस्ता गोल्ड खरीदा था, और आज उसकी मार्केट वैल्यू डबल हो गई तो आपको वैल्यू में जबरदस्त फायदा मिलता है। ये ज्वैलरी पर्सनलाइज्ड भी होती है और आपकी मेमोरी भी जिंदा रहती है साथ ही आज के ट्रेंड्स से मैच भी करती है।

ट्रेंडिंग डिजाइंस और फ्यूचर लुक स्टाइल

प्रूफ स्टाइल आजकल के यंग बायर्स सिर्फ शुद्धता नहीं, बल्कि स्टाइल, वेरायटी और वेल्यू भी देख रहे हैं। इसलिए 1 ग्राम ज्वैलरी, इमिटेशन सेट्स और रिसाइकल्ड ऑप्शन्स इतने पॉपुलर हो गए हैं। मार्केट में रोज नए डिजाइंस आ रहे हैं स्लिक ब्रेसलेट्स, स्टेटमेंट चोकर, मिनिमल रिंग्स और इथनिक इयररिंग्स सबकुछ अब 1000-15000 तक की रेंज में। और सबसे बड़ी बात इन्हें देखकर कोई अंदाजा भी नहीं लगा सकता कि ये रियल गोल्ड नहीं हैं। यही वजह है कि आज का स्मार्ट कस्टमर अब क्वालिटी के साथ स्टाइल और प्राइस दोनों का कंपेरिजन करके ही चॉइस कर रहा है।

इनका कहना है...

मार्केट में अब गोल्ड के लिए कई स्मार्ट ऑप्शन आ गए हैं जैसे रिसाइकल्ड ज्वैलरी। शादी सीजन में रोजाना करीब 40 प्रतिशत ग्राहक इन्हीं ऑप्शन्स को पूछते हैं।

-जितेंद्र सोनी, गुलाब ज्वैलर्स

हर दिन 20-30 ग्राहक आते हैं जो बजट में रॉयल लुक चाहते हैं। 1 ग्राम गोल्ड, इमिटेशन कुंदन जैसी ज्वैलरी अब सबसे ज्यादा डिमांड में है।

सुभाष सोनी, मनमोहन ज्वैलर्स

लोग अब समझदारी से खरीदारी कर रहे हैं। पुराना सोना रिसाइकल करवा के नए डिजाइनों में ढलवाना ट्रेंड बन गया है, जिससे स्टाइल भी मिलता है और बचत भी।

-अमित सोनी, स्वर्ण गंगा ज्वैलर्स

बजट फ्रेंडली खरीदारी

ज्वैलरी शॉप्स और ब्रांड आउटलेट्स में हर दिन ऐसे 20 से 30 ग्राहक पहुंच रहे हैं जो सिर्फ बजट फ्रेंडली विकल्प ढूंढने आते हैं। इन ग्राहकों को अपनी जरूरत और जेब के अनुसार एक ग्राम गोल्ड, इमिटेशन डायमंड या रिसाइकल ज्वैलरी में से बेस्ट ऑप्शन मिल जाते हैं। खासकर शादी-ब्याह के इस सीजन में ये विकल्प लोगों के बीच काफी पॉपुलर हो रहे हैं। दिखने में एकदम ट्रेंडी, क्वालिटी में शानदार और कीमत में किफायती यही कारण है कि अब गोल्ड ज्वैलरी का मतलब सिर्फ भारी इन्वेस्टमेंट नहीं, बल्कि स्मार्ट स्टाइल है।

सोने सा लुक, बजट में फिट

अब सोना खरीदने का मतलब भारी जेब नहीं। मार्केट में एक ग्राम गोल्ड ज्वैलरी का ट्रेंड तेजी से बढ़ रहा है। इसमें एलॉय मेटल में गोल्ड की फिनिशिंग होती है और ऊपर से हाई पॉलिश फिनिश दी जाती है, जिससे वो एकदम ओरिजिनल गोल्ड जैसा दिखता है। चाहे रिंग हो, चेन, झुमका या ब्रेसलेट - सबमें ऐसे डिजाइंस मिल रहे हैं जो असली सोने से अलग पहचान नहीं रखते। सिर्फ 1000 रुपये से शुरू होकर ये रेंज 5000-6000 तक जाती है, और शादी, फंक्शन या गिफ्ट के लिए एकदम परफेक्ट चॉइस बन गई है।

रॉयल लुक, नो टेंशन प्राइस

आजकल इमिटेशन डायमंड ज्वैलरी की डिमांड काफी बढ़ गई है, क्योंकि लुक वाइज ये रियल डायमंड जैसी लगती है वो भी एकदम अफोर्डेबल रेट पर। कुंदन ज्वैलरी में भी अब मार्केट में ऐसे ऑप्शन आ गए हैं जो देखने में किसी रियल गोल्ड सेट से कम नहीं। असली में वही कुंदन 5 लाख तक पड़ता है, लेकिन एक वर्जन में ये 1000-8000 की रेंज में मिल जाता है। खास बात ये है कि डिजाइंस इतने ट्रेंडी हैं कि पार्टी, वेडिंग या किसी भी ट्रेडिशनल ओकेजन में स्टाइल आइकॉन बन सकते हैं वो भी बिना जेब ढीली किए।

AC से बढ़ता बीमारियों का खतरा

एसी की हवा से सूख सकती म्यूकस मेम्ब्रेन
जानें डॉक्टर की सलाह

जोधपुर। अप्रैल का महीना चल रहा है और हर दिन तापमान में बढ़ोत्तरी देखने को मिल रही है। ऐसे में भीषण गर्मी से बचने के लिए बहुत से लोग एयर कंडीशनर (एसी) का इस्तेमाल कर रहे हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि लंबे समय तक एसी में रहना सेहत के लिए नुकसानदायक हो सकता है। दरअसल एसी गर्मी और नमी दोनों को कम करता है, जिससे चिलचिलाती धूप और अधिक पसीने से राहत मिलती है। हालांकि इसके ज्यादा इस्तेमाल से स्किन, बाल, नाक और गले में ड्राईनेस बढ़ सकती है। यह ड्राईनेस म्यूकस मेम्ब्रेन को प्रभावित कर सकती है।

शरीर में नाक, मुंह, फेफड़ों और आंतों जैसी जगहों पर एक पतली व नम लेयर होती है, जिसे म्यूकस मेम्ब्रेन कहते हैं। यह शरीर को बैक्टीरिया और वायरस से बचाती है। जब यह म्यूकस मेम्ब्रेन सूख जाती है तो यह अपनी प्रोटेक्टिव क्षमता खो देती है। इससे बैक्टीरिया और वायरस आसानी से शरीर में घुसकर हमें बीमार कर सकते हैं। ऐसे में अउ में ज्यादा समय बिताने से सर्दी, खांसी और लो इम्यूनिटी, सुस्ती और डिहाइड्रेशन जैसी समस्याएं हो सकती हैं। इंडियन जर्नल ऑफ ऑक्यूपेशनल एंड एनवायर्नमेंट मेडिसिन (IJOEM) में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, एसी हमारी सेहत गहरा प्रभाव डालती है। लंबे समय तक एसी इस्तेमाल करने वाले लोगों में रेस्पिरेटरी इन्फेक्शन और एलर्जी का खतरा ज्यादा रहता है। तो चलिए, आज जरूरत की खबर में लंबे समय तक अउ में रहने के नुकसान के बारे में बात करेंगे। साथ ही जानेंगे कि- इससे किस तरह की स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं? एसी के नुकसान से बचने के लिए क्या करना चाहिए?

SUNDAY रिपोर्टर

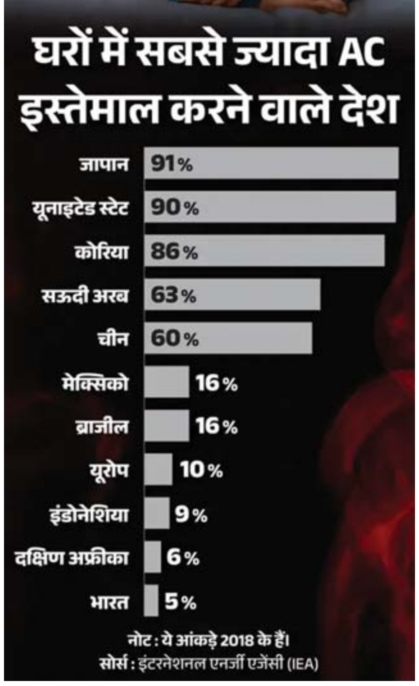

सबसे ज्यादा एसी इस्तेमाल करने ग्यारहवें नम्बर पर भारत

सबसे पहले आइए जानते हैं कि दुनिया के किन देशों में घरों में सबसे ज्यादा एसी का इस्तेमाल किया जाता है। इंटरनेशनल एनर्जी एजेंसी के मुताबिक, भारत इस लिस्ट में 11वें नंबर पर है। दिए ग्राफिक से इस बारे में जानिए-

लंबे समय तक एसी में रहना क्यों नुकसानदायक

पल्मोनोलॉजिस्ट डॉ. एस. जेड. जाफरी बताते हैं कि अगर एसी लंबे समय से साफ नहीं की गई है तो इससे निकलने वाली जहरीली गैसें, धूल और अन्य कण हवा में फैल जाते हैं। इससे इनडोर एयर क्वालिटी खराब हो जाती है और एलर्जी, रेस्पिरेटरी इन्फेक्शन समेत कई अन्य स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन में पब्लिश एक स्टडी के मुताबिक, खराब इनडोर एयर एनवायर्नमेंट से सिरदर्द का खतरा बढ़ जाता है।

ज्यादा समय तक एसी में रहने से कौन सी स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं?

एसी कमरे से नमी सोख लेता है, जिससे हवा ड्राई हो जाती है। ड्राई एयर से शरीर और स्किन की नमी कम हो जाती है। इससे डिहाइड्रेशन, सिरदर्द, थकान और ड्राई स्किन समेत कई अन्य समस्याएं हो सकती हैं। लंबे समय तक एसी की हवा में रहने से सांस संबंधी समस्या भी हो सकती है। हवा आंखों को भी ड्राई कर सकती है, जिससे उसमें जलन, खुजली और लालिमा हो सकती है। वहीं अउ की ठंडी हवा शरीर के इम्यून सिस्टम को कमजोर कर सकती है। इससे वायरल और बैक्टीरियल इन्फेक्शन का खतरा बढ़ जाता है। लंबे समय तक अउ में रहने से कई स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा बढ़ जाता है। इसे नीचे दिए ग्राफिक से समझिए-

एसी में कितनी देर तक रहना सुरक्षित है?

यह व्यक्ति की सेहत, एसी के टेम्परेचर और कमरे की नमी पर निर्भर करता है। अगर एसी का टेम्परेचर 24-25 डिग्री सेल्सियस के बीच है तो 4-6 घंटे तक उसमें रह सकते हैं। हालांकि इसके लिए बीच-बीच में एसी से बाहर निकलकर ताजी हवा लेनी चाहिए। इससे शरीर का तापमान संतुलित रहता है और ड्राईनेस भी कम होती है। इससे कम टेम्परेचर में ज्यादा देर तक रहना नुकसानदायक हो सकता है।

किन लोगों के लिए एसी में रहना ज्यादा खतरनाक है?

एसी में रहना कुछ लोगों के लिए दूसरों की तुलना में ज्यादा खतरनाक हो सकता है। छोटे बच्चे और बुजुर्गों की इम्यूनिटी कमजोर होती है। उन्हें एसी के ठंडे तापमान से सर्दी-जुकाम और अन्य रेस्पिरेटरी इन्फेक्शन होने का खतरा अधिक होता है। उनकी स्किन भी अधिक सेंसिटिव होती है, जिससे ड्राईनेस और खुजली होने का खतरा होता है। इसलिए छोटे बच्चों और बुजुर्गों को एसी वाले कमरे में ज्यादा समय तक नहीं रहने देना चाहिए। एसी की ठंडी हवा अस्थमा, एलर्जी और वायरल इन्फेक्शन से पीड़ित लोगों के लक्षणों को ट्रिगर कर सकती है। जिन लोगों को एक्जिमा और सोरायसिस जैसी स्किन संबंधी समस्याएं हैं, उनके लिए भी एसी में ज्यादा समय तक रहना नुकसानदायक हो सकता है। इसके अलावा जिन लोगों जोड़ों में दर्द की समस्या रहती है। उन्हें भी एसी की ठंडी हवा नुकसान पहुंचा सकती है।

देर तक एसी में रहने के लिए क्या सावधानियां बरतनी चाहिए?

अगर आप लंबे समय तक एसी में रहते हैं तो इसके लिए कुछ सावधानियां बरतनी जरूरी हैं। जैसे कि-

- *बहुत ठंडे तापमान से बचें।*
- *हर एक घंटे में कम-से-कम 5-10 मिनट के लिए बाहर निकलें।*
- *आंखों को ड्राईनेस से बचाने के लिए आई ड्रॉप्स का इस्तेमाल करें।*
- *एसी की हवा को सीधे अपने शरीर पर न पड़ने दें।*
- *शरीर की सुस्ती दूर करने के लिए नियमित रूप से एक्सरसाइज करें।*
- *एसी को नियमित रूप से साफ करें ताकि धूल और गंदगी न जमा हो।*

एसी के नुकसान से बचने के लिए क्या करना चाहिए?

एसी के संभावित नुकसान से बचने के लिए कुछ बातों का ध्यान रखना जरूरी है। इसे नीचे दिए ग्राफिक से समझिए-

शादी से डर लगने लगा है...

अरेंज हो या लव मैरिज, डेट होल्ड कर रहे युवा, परिजन लेकर पहुंचे रहे काउंसलर्स के पास

एक्सपर्ट्स का कहना, पति-पत्नी के रिश्तों में हत्या के पीछे स्पाउज क्राइम सिंड्रोम बड़ा कारण

जोधपुर। मैं शादी करके मरना नहीं चाहता इसलिए लव मैरिज भी कैंसिल कर दी। शादी के बाद क्या भरोसा कि मेरी पत्नी मुझे न मार दे। नहीं शादी करके मैं किसी खतरे में नहीं आना चाहता। स्पाउज क्राइम नामक सिंड्रोम आज के यूथ में नया डर बनकर उभर रहा है। बीते दिनों तेजी से पत्नियों द्वारा पतियों की हत्या करने के मामले सामने आने के बाद इनमें अलग तरह का डर व्याप्त हो गया है। रिलेशनशिप काउंसलर्स का कहना है कि ऐसे कई मामले काउंसलिंग के लिए पहुंच रहे हैं। शादी जिसे अब तक सात जन्मों का साथ माना जाता था। अब बैचलर युवाओं को सात खतरे जैसा महसूस होने लगा है। जिसे स्पाउज क्राइम सिंड्रोम कहा जाता है। यह अब एक सोशल ट्रिगर बनता जा रहा है, कुछ ही समय में युवाओं की सोच में बड़ा बदलाव देखने को मिल रहा है। अरेंज हो या लव मैरिज, दोनों ही रिश्तों पर से युवाओं का विश्वास डगमगाता दिख रहा है।

SUNDAY रिपोर्टर

केस-1: सोशल मीडिया पर सौरभ हत्याकांड की खबरें देखने के बाद 25 वर्षीय युवक ने अपनी शादी होल्ड करने की जिद कर ली। घरवालों ने काफी समझाया लेकिन वह नहीं माना। उसका कहना था कि वह ऐसे नहीं मरना चाहता। हारकर परिजनों को उसको काउंसलर के पास भेजना पड़ा। वह शादी के लिए तो तैयार हो गया लेकिन डेट आगे बढ़वा दी।

केस-2: 29 वर्षीय एक युवक की हाल ही में अरेंज मैरिज तय हुई थी। सौरभ हत्याकांड के बाद वह इतना डर गया कि शादी तोड़ने की बात करने लगा। परिजन परेशान हो गए। उसे काफी समझाया लेकिन जब वह नहीं माना तब काउंसलिंग करवाई गई। किसी तरह कुछ शर्तों पर वह शादी करने के लिए तैयार हुआ। जिसमें उसने साफ कहा कि शादी के बाद विपरित परिस्थितियां होने पर तलाक की नौबत आई तो वह एलमनी नहीं देगा।

ये है स्थिति

बीते एक-दो महीने में शादी जैसी संस्था में भरोसा खिसकने की समस्या लेकर काउंसलिंग सेंटर्स में आने वाले मामलों में बढ़ोत्तरी दर्ज की जा रही है। निजी काउंसलर्स के साथ ही स्वास्थ्य विभाग की मेंटल हेल्थ ओपीडी में भी ऐसे मामलों में 35 प्रतिशत तक बढ़ोत्तरी हुई है। रिलेशनशिप काउंसलर्स बताते हैं कि स्थिति यहां तक गंभीर हो गई है कि कुछ मामलों में युवा इस बंधन में बंधने से पहले ही पीछे हट रहे हैं। युवाओं का मानना है कि जहां पति या पत्नी शादी जैसे रिश्ते में रहते हुए एक-दूसरे के खिलाफ हिंसक हो जाते हैं, ऐसे रिश्ते पर भरोसा कैसे किया जा सकता है।

ये है स्पाउज क्राइम सिंड्रोम

स्पाउज क्राइम सिंड्रोम एक व्यवहारिक पैटर्न है। जिससे एक उभरता हुआ मानसिक-सामाजिक ट्रेंड माना जा रहा है। जिसमें शादी जैसे रिश्ते में विश्वास, संवाद और संतुलन की कमी चरम पर पहुंचकर अपराध या हिंसा में बदल जाती है। यह अब एक सोशल ट्रिगर है। हाल के दिनों में यह ट्रेंड तेजी से सामने आया है, खासकर उन मामलों में जहां पति-पत्नी के बीच घरेलू कलह या अविश्वास ने मर्डर जैसी खौफनाक स्थिति पैदा कर दी।

स्पाउज क्राइम सिंड्रोम के कारण

एक्सपर्ट्स बताते हैं कि स्पाउज क्राइम सिंड्रोम अचानक से पैदा नहीं होता बल्कि लंबे समय से कई कारक इसकी वजह बनते हैं। बस किसी घटना से ये ट्रिगर हो जाता है। मुख्य रूप से बचपन या पूर्व संबंधों के अनुभवों के कारण असुरक्षित जुड़ाव की भावना होना, कंट्रोल डिसऑर्डर यानी जीवनसाथी पर पूर्ण नियंत्रण रखने की मानसिक प्रवृत्ति, तर्क के बजाए गुस्से और आक्रोश में तुरंत प्रतिक्रिया देने की प्रवृत्ति, अकेले छूट जाने या धोखा खाने का भय जैसे फैक्टर इसे ट्रिगर करते रहते हैं।

इनका है कहना

"शादी जैसी संस्था अब कमजोर हो गई है। पहले शादी को सिर्फ सामाजिक बंधन नहीं बल्कि सात जन्मों तक विषय माना जाता था। अब इसे मनोवैज्ञानिक समझदारी का विषय भी मानना होगा। यूथ में शादी के प्रति विश्वास खो रहा है। हमारे पास ऐसे कई मामले आ रहे हैं। रिश्तों की गहराई नापने के लिए काउंसलिंग और मानसिक स्वास्थ्य पर जोर जरूरी हो गया है।

डॉ. चंद्रकला गोस्वामी, रिलेशनशिप काउंसलर

"सोशल मीडिया पर रिश्तों की नुमाइश और तुलना से पैदा होने वाला दबाव, दहेज, प्रेम विवाह को अस्वीकारना या पारिवारिक दखल, शादी को लेकर अधूरी समझ या अव्यवस्थित अपेक्षाएं कई तरह से शादी जैसी संस्था को प्रभावित कर रही है। जिससे इस तरह के पैटर्न सामने आ रहे हैं।

डॉ. श्वेता पारीक, क्लीनिकल काउंसलर

"पति-पत्नी की हत्या के कई चौंकाने वाले मामलों ने शादी की धारणा को हिलाकर रख दिया है। पतियों की हत्या की घटनाओं ने समाज को झकझोरा है। जिससे युवाओं के मन में शादी को लेकर डर पैदा हो गया है। अरेंज हो या लव मैरिज, दोनों ही रिश्तों पर से विश्वास डगमगाता दिख रहा है।

डॉ. अनीता मोरल, काउंसलर

...तो इसलिए लड़कियां पहनती हैं शादी में वरमाला

जोधपुर। हिंदू धर्म में विवाह 16 संस्कारों में से एक संस्कार है। ऐसा माना जाता है कि विवाह के बाद संतान पैदा करने के बाद ही व्यक्ति पितृ ऋण से मुक्त हो पाता है। साथ ही विवाहित व्यक्ति ही किसी धार्मिक कार्य को कर सकता है। हिंदू धर्म में 8 प्रकार के विवाह बताए गए हैं। ब्रह्म विवाह, दैव विवाह, आर्श विवाह, प्रजापत्य विवाह, गंधर्व विवाह, असुर विवाह, राक्षस विवाह और पैशाच विवाह। इसमें गंधर्व विवाह को लव मैरिज भी कहते हैं। आइए जानते हैं विवाह के अन्य रस्में, लव मैरिज और उसमें वरमाला का महत्व... अरेंज मैरिज जिसे प्राचीन काल में ब्रह्म विवाह कहा जाता था। इसमें सिंदूर दान एक रस्म है। हर शादीशुदा महिला सिंदूर लगाती है। माना जाता है कि इससे उसके पति की आयु लंबी होती है। पति सिर्फ विवाह वाले दिन ही अपनी पत्नी की मांग में सिंदूर भरता है। उसके बाद रोजाना सुहागनें अपनी मांग भरती हैं।

SUNDAY रिपोर्टर

हिंदू धर्म में कन्यादान को सबसे बड़ा दान

अरेंज मैरिज में वर वधू को मंगलसूत्र पहनाता है। इसे स्त्रियां अपने सुहाग की निशानी मानती हैं। माना जाता है कि वे इसे संकट में भी अपने से अलग नहीं होने देतीं। इसका उनके वैवाहिक जीवन में पवित्र और बहुत महत्व होता है। ब्रह्म विवाह तब तक पूरा नहीं होता जब तक वर और वधू मिलकर अग्नि के सात फेरे न ले लें। हर फेरे के साथ वर और वधू जीवन में एक-दूसरे के सहयोग की कसमें खाते हैं। हर फेरा अपने आप में गृहस्थी की गाड़ी खींचने के लिए जरूरी चीजों की सदैव याद दिलाता रहता है। यह एक पवित्र रस्म मानी जाती है। ब्रह्म विवाह में वधू का पिता वर के हाथ में अपनी पुत्री का हाथ देकर कन्यादान करता है। हिंदू धर्म में कन्यादान को सबसे बड़ा दान माना जाता है। यह माना जाता है कि कन्यादान से व्यक्ति को सद्गति मिलती है। विवाह के बाद वधू अपने पति के घर विदा हो जाती है और अपने ससुराल में पहली बार गृह प्रवेश करती है। उसे अनाज से भरे एक पात्र को पैर मारकर घर में प्रवेश करना होता है। माना जाता है कि इससे वधू लक्ष्मी के रूप में घर में संपन्नता लेकर आई है। यह भी एक महत्वपूर्ण रस्म है।

प्राचीन समय में भी युवतियों को अपनी पसंद का वर चुनने की थी आजादी

वरमाला सीधे-सीधे गंधर्व विवाह से जुड़ा है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार गंधर्व विवाह पेड़ के नीचे युवक और युवती की रजामंदी से माला पहना कर होता था। सीधे तौर पर यह स्त्रियों के अधिकार से जुड़ा होता था। प्राचीन समय में भी युवतियों को अपनी पसंद का वर चुनने की आजादी थी। वह योग्य वर चुनने के लिए कोई शर्त भी रखती थी, जो उसे पूरा करता था उसे ही वह वरमाला पहनाती थी। यह अधिकार सिर्फ स्त्रियों को था। वर को वधू चुनती थी आज की तरह वधू को वर नहीं पसंद किया करते थे। यह हक सिर्फ स्त्रियों को था। इतिहास में स्वयंवर के तमाम उदाहरण मिलते हैं। यह बताता है कि प्राचीन काल से ही स्त्रियों को अपना मनपसंद वर चुनने का अधिकार था। जैसे सीता स्वयंवर। द्रौपदी स्वयंवर। पृथ्वीराज चौहार और संयोगिता का प्रेम विवाह।

सिल्वर ज्वेलरी की हाई हो रही डिमांड

पीतल और तांबे के बर्तन की खरीदारी भी तेज

जोधपुर। गोल्ड के रेट भले ही बहुत हाई हो गये हैं लेकिन इसके अलावा और भी बहुत ऑप्शन हैं। जैसे सिल्वर ज्वेलरी भी अब काफी चलन में आ रही है। इसके अलावा, लोग तांबा और पीतल के बर्तनों की भी खरीदारी कर रहे हैं। सहालग के चलते इसकी खरीदारी सबसे ज्यादा होती है। व्यापारियों के अनुसार कस्टमर अन्य ऑप्शन की भी तलाश करता है। ताकि उसका बजट भी बन रहे।

SUNDAY रिपोर्टर

डिमांड में चांदी की ज्वेलरी और बर्तन

द्वारका ज्वेलर्स के ऑनर सीवी सोनी बताते हैं कि भले ही गोल्ड रेट महंगा है लेकिन, फिर भी लोग खरीदारी कर रहे हैं। हालांकि, इसके अलावा अन्य ऑप्शन भी हैं। सिल्वर ज्वेलरी भी काफी डिमांड में है। खासतौर पर सिल्वर की पायल, बिछिया, नेकलेस और पेंडेंट काफी खरीदे जा रहे हैं। शादी के दौरान गिफ्ट के तौर पर दिए जाने वाले चांदी के ग्लास, चप्पल, टी-सेट, भगवान के विग्रह और चाबी के छल्ले आदि भी खूब बिकते हैं क्योंकि शादी में इनका गिफ्ट देने का चलन सबसे ज्यादा होता है। इनकी कीमत वजन और डिजायन के अनुसार 500 रुपए से शुरू होकर लाखों में जाती है।

रेट लगातार बढ़ रहे

श्री पुरम ज्वेलर्स ऑनर अरूण कश्यप के अनुसार गोल्ड की ही तरह सिल्वर के रेट भी काफी हाई चल रहे हैं। इसमें इंवेस्टमेंट करना एक सेफ जरिया है क्योंकि आगे भी इसके दामों में उछाल ही देखने को मिलेगा। गोल्ड की तरह सिल्वर भी एक जनरेशन से दूसरे जनरेशन को पास आउट होता है और यह देखने में भी काफी आकर्षक लगते हैं। इन्हें गिफ्ट में देने का चलन भी है। खासतौर पर चांदी का गिलास या चांदी का नोट शगुन के रूप में देने की परंपरा है।

सहालग का दिखता अधिक असर

मेटल मर्चेंट एसोसिएशन के हरीशचंद्र अग्रवाल बताते हैं कि बर्तन मार्केट में हमेशा तेजी ही देखने को मिलती है। सावों के दौरान तांबा और पीतल के बने पारंपरिक बर्तन और सजावटी आइटम की डिमांड सर्वाधिक होती है। इसमें, प्लेट, गिलास, कटोरी व चम्मच के अलावा मूर्तियां व सजावटी आइटम तैयार किए जाते हैं। जिसमें गणेश-लक्ष्मी से लेकर अन्य भगवानों की मूर्तियां समेत आरती की थाल, दीया व घंटी आदि शामिल हैं। इनका रेट वजन के हिसाब से होता है।

घरों में कटलरी का बढ़ा चलन

व्यापारियों की माने तो पहले के दौर में लोग खाना खाने और खाना बनाने के लिए तांबा-पीतल के बर्तनों का ही प्रयोग करते थे। यह चलन एकबार फिर आ गया है। खासतौर पर कोरोना के बाद से इम्युनिटी को देखते हुए घरों में तांबे के बर्तन में खाना और पीतल के बर्तनों में खाना बनाने का चलन तेजी से बढ़ रहा है। जहां तक प्राइस की बात है कि तो तांबा के बर्तन 1100-2000 रुपए तक मिल रहे हैं। जबकि, पीतल के बर्तन 700-1500 रुपए के बीच में मिल रहे हैं। अगर मूर्तियों की बात करें तो इसकी शुरूआत 1100 रुपए से होती है। राजधानी में तांबा का करीब 200 करोड़ रुपए और पीतल का 100 करोड़ रुपए का सालाना कारोबार होता है।

मेटल मार्केट सालाना बिक्री

तांबा
200 करोड़ रुपए

पीतल
100 करोड़ रुपए

नोट- सेल का यह आकड़ा जोधपुर का है।

कम कैरेट की गोल्ड ज्वेलरी बन रही जोधपुराइट्स की पसंद

शादी-विवाह के मौके पर बेटी या बहू को बतौर गिफ्ट गोल्ड ज्वेलरी दी जाती है, लेकिन गोल्ड महंगा होने की वजह से आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। गोल्ड के अलावा भी कई अन्य विकल्प हैं, जिसमें रिसाइकल्ड गोल्ड या कम कैरेट के गोल्ड से बनी ज्वेलरी एक बेहतर ऑप्शन साबित हो सकती है...

इनका कहना है...

ग्राहक को 14 कैरेट से अच्छा 18 या उससे अधिक कैरेट की ज्वेलरी लेनी चाहिए, जिससे उसका वर्तमान समय से लेकर आने वाले समय तक निवेश बना अच्छा रहे।

-सीवी सोनी, द्वारका ज्वेलर्स, जोधपुर

14 कैरेट का गोल्ड आज कल केवल और केवल डायमंड ज्वेलरी में उपयोग किया जाता है। इसे युवा ज्यादा पसंद करते हैं।

-अरूण कश्यप, श्रीपुरम ज्वलेर्स

अभी 14 कैरेट की नेचुरल ज्वेलरी मार्केट में नहीं है। भविष्य में अगर इस कैरेट में ज्वेलरी आए तो हो सकता है कि इसकी मार्केट में कुछ डिमांड हो।

-नवीन सोनी, अध्यक्ष, नई सड़क व्यापारी संगठन, जोधपुर

जोधपुर। शादी-विवाह के मौके पर बेटी या बहू को बतौर गिफ्ट गोल्ड ज्वेलरी दी जाती है, लेकिन गोल्ड महंगा होने की वजह से आपको परेशान होने की जरूरत नहीं है। गोल्ड के अलावा भी कई अन्य विकल्प हैं, जिसमें रिसाइक्ल्ड गोल्ड या कम कैरेट के गोल्ड से बनी ज्वेलरी एक बेहतर ऑप्शन साबित हो सकती है। ज्वेलर्स के अनुसार, लोगों को 18 कैरेट और 14 कैरेट गोल्ड से बनी ज्वेलरी काफी पसंद की जा रही है, जो लाइट वेट होने के साथ-साथ देखने में भी अच्छी लगती है। कई मशहूर ब्रांड ऐसे प्रोडक्ट लेकर आ चुके हैं साथ ही इनमें रिटर्न भी पूरा मिलता है।

SUNDAY रिपोर्टर

युवाओं की बना पहली पसंद

रीसाइकल्ड गोल्ड का काम पहले से होता चला आ रहा है। गोल्ड और डायमंड ज्वेलरी में इसका यूज ज्यादा होता है। इसकी बनावट और पकड़ मजबूत मानी जाती है। इतना ही नही, यंग जनरेशन को देखते हुए लाइट वेट ज्वेलरी में इसका इस्तेमाल ज्यादा हो रहा है। इसमें अब हेवी डिजाइन भी आ रही है। द्वारका ज्वेलर्सऑनर सीवी सोनी बताते हैं कि सबसे कम 14 कैरेट गोल्ड का प्रचलन है। जिसका उपयोग ज्यादातर डायमंड ज्वेलरी में किया जाता है। ग्राहक को 14 कैरेट से अच्छा 18 या उससे अधिक कैरेट की ज्वेलरी लेनी चाहिए ताकि भविष्य में भी उसका निवेश अच्छा रहे। इसमें सोने की क्वालिटी भी मेंटेन रहती है। हालांकि, इसकी रेंज 4 हजार से शुरू होती है, जिसमे नोज पिन जैसे छोटे आइटम आते हैं।

डायमंड में ज्यादा यूज

ज्वेलर्स बताते हैं कि भारत में सरकार द्वारा 14 कैरेट से कम का गोल्ड मान्य नहीं है। कई लोग बिना सरकार के मानकों को पूरा करते हुए 14, 15 या 16 कैरेट में गोल्ड बाजार में उपलब्ध करवाते हैं। 14 कैरेट का गोल्ड आज कल केवल और केवल डायमंड ज्वेलरी में उपयोग किया जाता है। यह गोल्ड ज्यादा प्रचलन में नहीं है क्योंकि इसका रंग जल्दी चला जाता है और इसमें गोल्ड प्योरिटी भी कम होती है। 14 कैरेट का सोना सबसे कम प्योरिटी का होता है। इसमें केवल 58 परसेंट गोल्ड होता है। ज्यादातर 14 कैरेट का गोल्ड डायमंड ज्वेलरी के लिए उपयोग में लाया जाता है, जो अभी डिमांड में है। अभी 14 कैरेट की नेचुरल ज्वेलरी मार्केट में नहीं है। भविष्य में अगर इस कैरेट में ज्वेलरी आए तो हो सकता है कि इसकी मार्केट में कुछ डिमांड आए।

जोधपुर में अग्र बन्धु सेवा समिति द्वारा अग्रवाल समाज का विराट परिचय सम्मेलन

अग्र समाज को एकसूत्र में बंध कर रहना चाहिए: जस्टिस मनोज गर्ग

जोधपुर। जोधपुर में अग्र बन्धु सेवा समिति द्वारा काफी वर्षों के बाद बहुत ही शानदार विवाह योग्य युवक-युवतियों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर परिचय सम्मेलन का आयोजन किया गया । जिसमें 100 से ज्यादा युवक-युवतियों ने अपना परिचय दिया जो की श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, पीलीबंगा, अजमेर, जयपुर, मेड़ता सिटी, उदयपुर ,जोधपुर व उत्तरप्रदेश , हरियाणा , दिल्ली आदि से आए हुए थे । कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यायाधिपति मनोज कुमार गर्ग, स्वागत अध्यक्ष उमेश लीला अध्यक्ष पश्चिमी राजस्थान अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन, विशिष्ट अतिथि नवनीत अग्रवाल निदेशक त्रिनय हॉस्पिटल, रमेश अग्रवाल पेपर वाला प्रसिद्ध समाज सेवी एवं उद्योगपति, संजय गर्ग युवा निर्यातक थे।

SUNDAY रिपोर्टर

परिचय सम्मेलन की आवश्यकता पर मंथन

सर्व प्रथम संस्था सचिव किशन बंसल ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया। अग्र बंधु सेवा समिति के बारे में विस्तार से जानकारी दी एवं बताया कि अभी तक अग्र बन्धु के द्वारा किए गए कार्य, अग्र भागवत, अग्रसेन जी का मंगलपाठ, होली स्नेह मिलन, दीपावाली स्नेह मिलन, अन्नकूट, हनुमान जयंती पर भजन संध्या की वजह से अग्र बन्धु ने जोधपुर शहर में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है। अग्रवाल समाज में रिश्ते करने में आ रही कठिनाई पर एवं परिचय सम्मेलन की आवश्कता के बारे में विचार रखे। संस्था के अध्यक्ष जेपी गर्ग के पिताजी के निधन की वजह से उनकी अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष दलीप बंसल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

इन्होंने दी सेवाएं

कार्यक्रम में अगर बन्धु समिति के संयोजक रोशन लाल गर्ग, कोषाध्यक्ष ललित अग्रवाल हरी अग्रवाल, विजय अग्रवाल, तरसेम जिंदल, राजीव गुप्ता, भोला राम, मनोज अग्रवाल, मंदीप गर्ग, जतीन गर्ग, विकास गर्ग, सुशील गर्ग,मनीष बंसल, अरुण सिंहल, मनदीप गर्ग, विनोद बंसल, भुवनेश गोयल, अमित गुप्ता, हर्ष अग्रवाल, दीपक बंसल ,प्रमोद गर्ग, सतवीर गर्ग इत्यादि ने अपनी सेवाएं दी।

इनका हुआ सम्मान

इस अवसर पर अग्र बन्धु सेवा समिति के संरक्षक के रूप में रामजीलाल लीला, सत्यनारायण अग्रवाल, दुलीचंद अग्रवाल, महेश सिंघल, रामप्रताप अग्रवाल का सम्मान किया गया एवं समिति का सहयोग करने वाले अग्र भामाशाह अशोक गर्ग, सुरेश गोयल, पी डी बंसल, मुकेश अग्रवाल, प्रेम गर्ग, ललित जिंदल, राकेश बंसल, अरुण सिंहल, अरविंद अग्रवाल, राम चंद्र अग्रवाल, कुसुम गुप्ता एवं अन्य का सम्मान किया गया।

प्री-वेड शूट बंद करने पर सहमति

कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष उमेश लीला ने बताया के अग्रवाल समाज में एक बड़ी कुरीति चल रही है प्री-वेड़ शूट बन्द होना चाहिए। इससे अक्सर रिश्ते टूट जाते हैं, काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इस अवसर पर उपस्थित सभी जन ने इस बात का समर्थन किया और प्री-वेड शूट सभी को बन्द करना चाहिए इस पर अपनी सहमति प्रदान की ।कार्यक्रम के अंतर्गत अगरबंधु सेवा समिति के जेपी गर्ग के पिता श्री का एक दिन पहेले ही निधन होने के कारण उपस्थित सभी सदस्यों ने श्रद्धांजलि अर्पित की । अग्र दर्पण के प्रधान संपादक विजय अग्रवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया ।

महिला मंडल का सराहीनय सहयोग

कार्यक्रम में अग्र बन्धु सेवा समिति महिला मण्डल का भी शानदार रूप से व्यवस्था में सहयोग रहा । जिनमे नीलम गर्ग, सुनीता बंसल,कोमल अग्रवाल , डिंपल अग्रवाल,मीनाक्षी बंसल, रिंकी अग्रवाल, कांता जिंदल, दीपशिखा गुप्ता, डिंपल अग्रवाल, मधु अग्रवाल एवम ट्विंकल अग्रवाल, चंद्रा मित्तल, रिनी अग्रवाल, नलिनी बंसल ,अनु गर्ग थे।

फोर रीजंस आफ मैटरनल मार्टेलिटी

जोधपुर। माताएं नौ माह तक बच्चे को पेट में रखती है और फिर उन्हें जन्म देती हैं। लेकिन, कई बार इन नौ माह के सफर में तमाम ऐसे कारण सामने आते हैं जिनकी वजह से बच्चे को जन्म देने के दौरान उनकी मौत हो जाती है। अगर शुरूआत से ही इन कारणों के साल्यूशन पर काम किया जाए तो इन मौतों को होने से

SUNDAY रिपोर्टर

बचाया जा सकता है। मेडिकल कॉलेज के आंकड़े बताते हैं कि पिछले पांच साल में एक लाख गर्भवती महिलाओं में 148 की मौत प्रसव के दौरान हुई है। ये आंकड़े वाकई चिंतित करने वाले हैं। इससे भी ज्यादा अहम कि 92 फीसदी मौतें रेफर वाले मामलों में हुई हैं। मतलब काम्प्लिकेशन जब जानलेवा हो गया तब महिलाओं को एसआरएन अस्पताल भेजा गया। अगर थोड़ा पहले रेफर किया जाता तो उनकी जान बच सकती थी। आइए जानते हैं कि कौन से चार कारण हैं जो गर्भवती महिलाओं की मौत के कारण बने हुए हैं।

शरीर में खून की कमी बनी अभिशाप

डॉक्टरों के अनुसार, मातृ मृत्यु का सबसे बड़ा कारण खून की कमी है। जिसका सीधा संबंध खानपान से होता है। अक्सर महिलाएं गर्भावस्था के दौरान अपने डाइट पर ध्यान नहीं देतीं। उन्हें यह भी नहीं पता होता कि उन्हें कितनी मात्रा में और किन चीजों का सेवन करना चाहिए। प्रेग्नेंसी के दौरान ऐसा डाइट जरूरी होता है, जिसमें भरपूर प्रोटीन, विटामिन और कार्बोहाईड्रेट हो। हरी सब्जियों और मौसमी फलों का सेवन सबसे बेहतर माना जाता है। अक्सर घरों में यह गलतफहमी होती है कि घी के लड्डू और अन्य पारंपरिक चीजें खाने से स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इससे शरीर में सिर्फ फैट जमा होता है और हेल्दी न्यूट्रिएंट्स की कमी रह जाती है। डॉक्टर बताते हैं कि नॉर्मल डिलीवरी के दौरान लगभग 500 एमएल और सिजेरियन डिलीवरी में 1000 एमएल तक खून गिरता है। अगर महिला के शरीर में पहले से ही खून की कमी होती है, तो वह इस ब्लड लॉस को सहन नहीं कर पाती। इससे उसकी मौत हो जाती है। खून की कमी से महिलाएं एनीमिक हो जाती हैं और प्रेग्नेंसी के दौरान ब्लड हैमरेज का सामना करना पड़ता है।

अनसेफ अबॉर्शन, हर महीने जानलेवा मामले

हर महीने लगभग 5 से 6 मामले ऐसे सामने आते हैं, जिनमें महिलाएं अनसेफ अबॉर्शन के कारण जान गंवा देती हैं। इनमें से कई बार महिलाएं बिना डॉक्टर की सलाह के दवाएं खा लेती हैं या गलत प्रक्रिया से गर्भपात करवाती हैं। खासकर तब, जब वे अनचाहे गर्भ को छुपाना चाहती हैं। लोग शहर में अबॉर्शन के प्रोसेस में न पड़ने के वजह से गांव में अनप्रोफेशनल दाइयों से अबॉर्शन करवाते हैं, जिनसे उन्हें आंत फटने तक की समस्या का सामना करना पड़ता है। यह एक गंभीर स्थिति होती है, जिसमें समय पर चिकित्सा न मिलने पर महिला की मौत हो जाती है।

डाइट की अनदेखी पड़ती भारी

गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को अपने खानपान का खास ख्याल रखना चाहिए। इस दौरान एक संतुलित डाइट जिसमें प्रोटीन, आयरन, विटामिन भरपूर मात्रा में हो, शरीर को डिलीवरी के लिए तैयार करता है.लेकिन बहुत-सी महिलाएं बाहर का खाना, तला-भुना या तीखा-मसालेदार खाना खा लेती हैं, जिससे उनके शरीर में कमजोरी बनी रहती है और डिलीवरी के समय गंभीर जटिलताएं उत्पन्न होती हैं।

अब मातृ मृत्यु दर घटाने की कवायद

वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशनकी 2009-2020 की स्टडी में वैश्विक और क्षेत्रीय स्तर पर मातृ मृत्यु के कारणों का विश्लेषण किया गया। डब्ल्यूएचओ ने 2030 तक मातृ मृत्यु दर को प्रति एक लाख जीवित जन्म पर 70 से कम करने का लक्ष्य तय किया है। इस स्टडी में 6 ऐसे मुख्य कारण बताए गए हैं, जो दुनियाभर में 90 फीसदी मातृ मृत्यु के लिए जिम्मेदार हैं। शहर के स्वरूप रानी अस्पताल के डेटा के अनुसार, पिछले 5 सालों में 1 लाख महिलाओं में से 148 की मौत गर्भावस्था के दौरान हुई है। इनमें अस्पताल की अपनी मरीजों की संख्या 7.9 फीसदी है, जबकि बाहर से रेफर होकर आई महिलाओं की संख्या 92.1 प्रतिशत है। डॉक्टरों का कहना है कि इनमें से अधिकतर महिलाओं को गंभीर जटिलताएं थीं और समय पर ट्रीटमेंट न मिल पाने के कारण उनकी मौत हो गई।

अनट्रेंड दाईयों पर निर्भरता

खासकर रूरल में अनप्रोफेशनल प्रैक्टिसेस जारी हैं। महिलाएं प्रशिक्षित डॉक्टर से डिलीवरी न करवाकर अनुभवहीन लोगों पर भरोसा कर बैठती हैं। इन लोगों के पास न तो सही ट्रेनिंग होती है और न ही इमरजेंसी में सही निर्णय लेने की समझ। कई बार इनकी वजह से डिलीवरी में देरी होती है और महिला को समय पर इलाज नहीं मिल पाता। ऐसे मामलों में अक्सर अस्पताल में मरीज की हालत गंभीर बन जाती है। ऐसे में केस बिगड़ जाता है और लास्ट आवर्स में अस्पताल पहुंचने से पहले महिलाओं की डेथ हो जाती है।

इनका कहना है...

गर्भावस्था में हेल्थ को लेकर की गई छोटी सी लापरवाही डिलीवरी के समय बहुत भारी पड़ सकती है। सही डाइट, रेगुलर चेकअप और समय पर इलाज बहुत जरूरी है। हमारे यहां सबसे ज्यादा मौतें रेफर मामलों में होती है। शुरू से आने वाली महिलाओं की सेफ डिलीवरी होती है।

-डॉ. इंदु थानवी, स्त्री रोग विशेषज्ञ

अक्सर महिलाएं जानकारी की कमी और सामाजिक डर की वजह से गलत फैसले लेती हैं। अनसेफ अबॉर्शन और अनट्रेंड दाइयों से डिलीवरी जानलेवा साबित हो सकती है। होना तो यही चाहिए कि शुरूआत से ही महिलाओं का फालोअप होना चाहिए जिससे उनकी सेफ डिलीवरी को बढ़ावा मिल सके।

डॉ. सरोज यादव, स्त्री रोग विशेषज्ञ

इम्यूनिटी के साथ ऐसे बढ़ाएं ब्यूटी

SUNDAY रिपोर्टर

जोधपुर। खूबसूरती का सीधा संबंध बेदाग, दमकती त्वचा और प्राकृतिक निखार से है। मौसम भले आग बरसाती गरमी का ही क्यों न हो, खूबसूरती के साथ सम झौता नहीं किया जा सकता। अतः गर्मियों में भी खूबसूरत बने रहने के लिए अपनाएं सही डाइट...

रोज लें हैल्दी डाइट

हर मौसम में हैल्दी डाइट लेने की आदत डालें. सर्दियों में तो लोग इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए हैल्दी चीजें खाते हैं, मगर गरमी का मौसम आते ही लापरवाह होने लगते हैं। यदि आप के साथ भी ऐसा है तो सावधान हो जाएं, क्योंकि यदि आप की डाइट डिस्टर्ब रहेगी तो स्किन अनहैल्दी टिशूज प्रोड्यूस करेगी यानी त्वचा की जो नई कोशिकाएं बनती हैं वे अस्वस्थ होंगी। जाहिर है ऐसे में आप की त्वचा पर वह रौनक नजर नहीं आएगी जो हैल्दी खानपान से आती है। इसलिए खूबसूरती बरकरार रखने के लिए खानपान पर ध्यान देना सब से ज्यादा जरूरी है।

डाइट में शामिल करें ये चीजें

■ **हरे पत्तों से दोस्ती:** खूबसूरत स्किन के लिए सब से पहले अपनी डाइट में हरी पत्तेदार सब्जियां शामिल करें। गर्मियों में स्किन प्रदूषण और धूप के कारण ज्यादा खराब होती है। कैमिकल्स और जंक फूड्स भी नुकसान पहुंचाते हैं। इसलिए नियम बना लें कि तीनों मील में कोई एक हरी सब्जी जरूर खाएंगी।

■ **डार्क चॉकलेट से बढ़ाएं खूबसूरती:** चॉकलेट सिर्फ फैट और वेट बढ़ाने का काम ही नहीं करती है। अगर आप डार्क चौकलेट सही तरीके से और संतुलित मात्रा में खाएंगी तो यह स्किन को खूबसूरत बनाने का काम भी करती है। डार्क चौकलेट ऐंटीऔक्सीडैंट्स से भरपूर होती है, इसलिए यह गर्मियों में सूर्य की किरणों के कारण हुए एजिंग इफैक्ट्स को स्किन पर नहीं आने देती।

■ **खट्टे फलों का फायदा:** मौसमी, संतरा, नीबू, कीवी, आलूबुखारा, आम, आंवला, बेरीज जैसे खट्टे फल स्किन को फ्लालैस ग्लो देने का काम करते हैं। अगर आप प्राकृतिक रूप से बेदाग और निखरी त्वचा चाहती हैं तो रोज इन में से किसी एक फ्रूट का सेवन जरूर करें। गर्मियों में ये फल आसानी से मिल जाते हैं. इन्हें नियमित रूप से खाने से स्किन अंदर से खूबसूरत बनी रहेगी।

ओमेगा-3 और विटामिन डी

अखरोट जैसे सूखे मेवों, अलसी, सूरजमुखी, सरसों के बीज, सोयाबीन, स्प्राउट्स, गोभी, ब्रोकली, शलगम, हरी पत्तेदार सब्जियों और स्ट्राबेरी जैसे कई फलों में ओमेगा-3 उच्च मात्रा में पाया जाता है.

अगर गर्मियों में भी खुद की फिटनैस से दूसरों की तारीफ बटोरना चाहती हैं, तो यह जानकारी आप के लिए ही है...

विटामिन डी के मुख्य स्रोतों में अंडे का पीला भाग, मछली का तेल, विटामिन डी युक्त दूध, मक्खन आदि होते हैं। ओमेगा-3 फैटी ऐसिड, विटामिन डी और प्रोटीन ये तीनों बेहद जरूरी हैं, जो स्किन को खूबसूरत बनाए रखते हैं।

ड्राईफ्रूट्स लाएं अंदर से निखार

ड्राईफ्रूट्स में खासतौर पर अखरोट और बादाम स्किन को खूबसूरत बनाने का काम करते हैं। अखरोट ओमेगा-3 और ओमेगा-6 फैटी ऐसिड से भरपूर होता है तो बादाम विटामिन ई का अच्छा स्रोत है। ग्लोइंग स्किन के लिए इन्हें डेली डाइट में शामिल करें।

क्या आप

SUNDAY रिपोर्टर

नियमित
प्राप्त करना चाहते हैं ?

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुंच जाएगा और नियमित **संडे रिपोर्टर** भेजने के लिए आपका मोबाइल नम्बर पंजीकृत हो जाएगा।

यदि आप किसी कारण से चिह्न द्वारा संदेश नहीं भेज पाए तो निम्नलिखित वाट्स ऐप नंबर द्वारा अपना संदेश भेजें...

7239963000 (केवल संदेश हेतु)

(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

मूल्य :

मात्र आपकी मुस्कान

SUNDAY रिपोर्टर

‘130 परमाणु हथियारों का निशाना भारत’

पाकिस्तान फौरन न्यूक्लियर अटैक की धमकी क्यों देने लगता है, भारत कैसे निपटेगा

जोधपुर/नई दिल्ली। ये जो गोरी, शाहीन, गजनवी (मिसाइलें) हैं, ये हमने चौक पर सजाने के लिए नहीं, हिंदुस्तान के लिए रखे हैं। हमारे पास जो 130 परमाणु हथियार हैं, आपको पता नहीं है कि पाकिस्तान के किस-किस हिस्से में ये रखे हुए हैं। ये बयान है पाकिस्तान के रेलमंत्री हनीफ अब्बासी का। पाकिस्तान के डिप्टी पीएम इशाक डार ने भी अपने परमाणु हथियारों से भारत को डराने की कोशिश की। भारत की सख्ती देखते ही सीधा परमाणु हमले की धमकी क्यों देने लगता है पाकिस्तान; मेगा स्टोरी में दोनों देशों के न्यूक्लियर पावर की पूरी कहानी...

SUNDAY रिपोर्टर

पाकिस्तान पहले भी देता रहा न्यूक्लियर अटैक की धमकी

कारगिल युद्ध के दौरान

1999 में कारगिल जंग में अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने पाकिस्तान बॉर्डर की कुछ तस्वीरें ली थीं, जिनमें परमाणु हथियारों की आवाजाही और तैनाती दिख रही थी।

तब के पाकिस्तानी विदेश सचिव **शमशाद अहमद** ने कहा...

“पाकिस्तान की सीमाओं की हिफाजत के लिए हम अपने शस्त्रागार में मौजूद किसी भी हथियार का इस्तेमाल करेंगे।”

उरी सर्जिकल स्ट्राइक से पहले

2016 में उरी सेक्टर में सेना के कैम्प पर हुए आतंकी हमले के बाद भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ गया था।

इस दौरान पाक रक्षा मंत्री **ख्वाजा आसिफ** ने कहा था...

“अगर पाकिस्तान की सुरक्षा खतरे में होगी तो हम न्यूक्लियर हथियार इस्तेमाल करने में संकोच नहीं करेंगे। इसके बाद भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक की।”

बालाकोट एयरस्ट्राइक के बाद

2019 के पुलवामा हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के बालाकोट में एयरस्ट्राइक कर दी थी।

पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री **इमरान खान** ने कहा था....

“भारत के प्रधानमंत्री से मेरा सवाल है कि क्या जो हथियार हमारे पास और आपके पास हैं, हम मिस कैलकुलेशन का जोखिम उठा सकते हैं। अगर यहां से परिस्थितियां और खराब होती हैं, तो न मेरे कंट्रोल में होंगी न नरेंद्र मोदी के।”

पहलगाम आतंकी हमले के बाद

22 अप्रैल को कश्मीर के पहलगाम में आतंकियों ने 26 लोगों की हत्या कर दी

भारत के सख्त रुख को देखते हुए 24 अप्रैल को पाकिस्तान के **डिप्टी पीएम इशाक डार** ने पाकिस्तानी संसद में कहा...

“हमारे पास परमाणु हथियार हैं, मिसाइल हैं। अगर किसी ने हमारी ओर आंख उठाई तो उसको उसी तरह का जवाब मिलेगा।”

पाकिस्तान न्यूक्लियर अटैक की धमकी आखिर क्यों देता है?

भारत को परमाणु हथियारों की चेतावनी देने के पीछे 3 प्रमुख थ्योरी हैं...

पारंपरिक युद्ध में भारत के मुकाबले पाकिस्तान कमजोर

ग्लोबल फायर पावर इंडेक्स 2025 के मुताबिक, भारत दुनिया की चौथी सबसे **शक्तिशाली मिलिट्री पावर** है, जबकि पाकिस्तान 12वें नंबर पर है।

पारंपरिक युद्ध के पैमानों जैसे- **मैनपावर, एयरपावर, नेवल पावर, नेचुरल रिसोर्स, फाइनेंशियल्स और लॉजिस्टिक्स** में भारत कहीं आगे है।

पाकिस्तान को लगता है कि अगर पारंपरिक युद्ध हुआ तो वह हार सकता है, इसलिए **'परमाणु धमकी'** से डराने की कोशिश करता है।

अमेरिकी थिंकटैंक सेंटर फॉर स्ट्रैटजिक एंड इंटरनेशनल स्टडीज के प्रोजेक्ट ऑन न्यूक्लियर इश्यू की **रिसर्च एसोसिएट दीया अष्टकला** के मुताबिक...

“पाकिस्तान का न्यूक्लियर प्रोग्राम पूरी तरह से भारत से अपनी सैन्य कमजोरियों को दूर करने और उसका मुकाबला करने के लिए है।”

दुनिया को दिखाना कि हालात बेहद खतरनाक हैं

भारत-पाकिस्तान सबसे सघन आबादी वाले क्षेत्र हैं, इसलिए दुनिया का कोई देश नहीं चाहेगा कि यहां परमाणु हथियारों का इस्तेमाल हो।

पाकिस्तान परमाणु हमले का राग अलापकर पूरी दुनिया का ध्यान खींचना चाहता है, ताकि **अमेरिका** और **चीन** जैसे देश दखल दें और भारत को एक्शन लेने से रोकें।

अमेरिकी थिंकटैंक कार्नेगी में न्यूक्लियर पॉलिसी के **सीनियर फेलो जॉर्ज पर्कोविच** के मुताबिक...

“साउथ एशिया में जब कभी तनाव बढ़ता है तो पाकिस्तान न्यूक्लियर अटैक की बात करता है, जिससे दूसरे देशों की यहां नजर पड़े।'”

पाकिस्तानी अवाम का ध्यान भटकाने के लिए

पाकिस्तान की घरेलू राजनीति आमतौर पर अस्थिर रहती है। साथ ही पाकिस्तान कंगाली और आतंकवाद से भी जूझ रहा है।

पाकिस्तान की सेना या सरकार पर जनता का दबाव बढ़ता है, तब वे भारत के खिलाफ परमाणु धमकी देकर जनता का ध्यान भटकाने और **'राष्ट्रवादी'** माहौल बनाने की कोशिश करते हैं।

अमेरिकी थिंकटैंक ब्रूकिंग्स इंस्टीट्यूट में फॉरेन पॉलिसी के **सीनियर फेलो मार्विन काल्ब** के मुताबिक...

“पाकिस्तान में बेअसर नेताओं और प्रशिक्षित सैन्य अफसरों का एक अस्थिर गठबंधन है, जो घरेलू आतंकवाद से जूझ रहा है। ऐसे में वो न्यूक्लियर अटैक का हल्ला करता है, जिसे कंट्रोल करने की बेहद जरूरत है।'”

भारत और पाकिस्तान की न्यूक्लियर पॉलिसी में फर्क

भारत की पॉलिसी- No First Use

2003 में भारत ने अपना न्यूक्लियर डॉक्टरीन जारी किया था। इसके मुताबिक, भारत ने न्यूक्लियर अटैक के लिए **‘No First Use’** की पॉलिसी अपनाई है।

यानी भारत पहला वार नहीं करेगा, लेकिन किसी देश के न्यूक्लियर अटैक का जवाब न्यूक्लियर अटैक से दे सकता है।

भारत किसी ऐसे देश पर परमाणु हथियार का इस्तेमाल नहीं करेगा, जिसके पास न्यूक्लियर पावर नहीं है।

पाकिस्तान की पॉलिसी- हमेशा अलर्ट मोड

पाकिस्तान के पास कोई ऑफिशियल न्यूक्लियर डॉक्टरीन नहीं है। समय-समय पर बयानबाजी से उसकी न्यूक्लियर पावर पॉलिसी के बारे में पता चलता है।

पाकिस्तान **‘No First Use’** की पॉलिसी नहीं मानता। यानी पाकिस्तान मौका आने पर पहले भी न्यूक्लियर अटैक कर सकता है।

पाकिस्तान न्यूक्लियर अटैक के लिए हमेशा मिसाइल, मिसाइल लॉन्चर, वाहनों आदि को अलग से तैनात रखता है। यानी परमाणु हथियारों को हाई-अलर्ट पर रखता है।

भारत में किसके हाथ में परमाणु हमले का बटन

भारत में परमाणु हथियारों से जुड़े हर फैसलों का अधिकार नेशनल कमांड अथॉरिटी के पास है। **इसमें दो परिषद हैं-**

राजनीतिक परिषद, जिसके अध्यक्ष प्रधानमंत्री होते हैं। यानी अभी **पीएम नरेंद्र मोदी** इसके अध्यक्ष हैं।

कार्यकारी परिषद, जिसके अध्यक्ष राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार होते हैं। यानी अभी **NSA अजीत डोवाल** इसके अध्यक्ष हैं।

भारत न्यूक्लियर और मिसाइल से जुड़ी चीजों के निर्यात को कंट्रोल करता है और न्यूक्लियर टेस्टिंग पर लगी रोक का भी पालन करता है।

भारत कभी भी अपने परमाणु हथियारों को हाई-अलर्ट पर नहीं रखता है। हालांकि भारत ने **परमाणु अप्रसार संधि (NPT)** और **व्यापक परीक्षण प्रतिबंध संधि (CTBT)** पर दस्तखत नहीं किए हैं।

पाकिस्तान में किसके हाथ परमाणु हमले का बटन

पाकिस्तान में न्यूक्लियर हथियारों के हर फैसले नेशनल कमांड अथॉरिटी ही लेती है। इसके **अध्यक्ष प्रधानमंत्री** होते हैं।

पाकिस्तान ने भी **परमाणु अप्रसार संधि (NPT)** और **व्यापक परीक्षण प्रतिबंध संधि (CTBT)** पर दस्तखत नहीं किए हैं।

इटैलियन आर्म्स कंट्रोल इंस्टीट्यूट 'लैंडौ नेटवर्क' ने जनवरी 2002 में एक रिपोर्ट पब्लिश की। इसमें पाकिस्तान के स्ट्रैटजिक प्लान्स डिवीजन के तत्कालीन मुखिया **लेफ्टिनेंट जनरल खालिद अहमद किदवई** के हवाले से लिखा है...

“परमाणु हथियारों का लक्ष्य केवल भारत है। अगर प्रतिरोध विफल हो जाता है और अस्तित्व ही दांव पर हो, तो इनका इस्तेमाल किया जाएगा।”

इसके 4 सिनैरियो हैं, अगर भारत...

- पाकिस्तान के एक बड़े हिस्से पर हमला कर उसे जीत ले। **(क्षेत्रीय सीमा)**
- पाकिस्तान की थल या वायु सेना के एक बड़े हिस्से को नष्ट कर दे। **(सैन्य सीमा)**
- पाकिस्तान को आर्थिक रूप से कमजोर कर दे। **(आर्थिक सीमा)**
- पाकिस्तान में राजनीतिक अस्थिरता लाए या घरेलू विध्वंस पैदा करे। **(घरेलू सीमा)**

पाकिस्तान से ज्यादा घातक भारत के न्यूक्लियर हथियार

साल	भारत के न्यूक्लियर हथियार	पाकिस्तान के न्यूक्लियर हथियार
2023	164	170
2024	172	170

Source: Stockholm International Peace Research Institute

फेडरेशन ऑफ अमेरिकन साइंटिस्ट की स्टेटस ऑफ वर्ल्ड न्यूक्लियर फोर्सेस रिपोर्ट, 2025 के मुताबिक, भारत के पास 180 परमाणु हथियार हैं। वहीं पाकिस्तान के पास 10 कम यानी 170 परमाणु हथियार हैं।

थर्मोन्यूक्लियर बम

भारत के पास न्यूट्रॉन, फिजन और थर्मोन्यूक्लियर बम हैं, जो 1.5 किमी से लेकर 10 किमी तक के एरिया को तबाह कर सकते हैं। यानी दुश्मन के छोटे-बड़े हर शहर को भारत नेस्तनाबूद कर सकता है।

वहीं पाकिस्तान के पास फिजन और टैक्टिकल न्यूक्लियर बम हैं, जो 0.8 किमी से लेकर 7 किमी तक के इलाके को खत्म कर सकते हैं। यानी पाकिस्तान छोटे इलाकों पर ही असर डाल सकता है।

पाकिस्तान के टैक्टिकल न्यूक्लियर भारत की बड़ी चुनौती

भारत 5 हजार किमी से ज्यादा दूरी तक यानी चीन तक न्यूक्लियर अटैक करने की क्षमता रखता है, लेकिन उसके पास 100 किमी से कम यानी कम रेंज में वार करने वाली परमाणु मिसाइल नहीं है।

जबकि पाकिस्तान ने 2011 में NASR (HAtf-9) लैंड बेस्ड बैलिस्टिक मिसाइल का परीक्षण किया, जिसकी रेंज महज 60 से 70 किमी है। यह पाकिस्तान का टैक्टिकल परमाणु हथियार है।

टैक्टिकल न्यूक्लियर हथियार कम रेंज में ज्यादा सटीक, लेकिन कम असरदार निशाना साधते हैं।

ये करीब एक किलोटन के छोटे न्यूक्लियर बम होते हैं। अमेरिका ने हिरोशिमा और नागासाकी में जो न्यूक्लियर बम गिराए थे वो करीब 15 किलोटन के थे।

पाकिस्तान के रिटायर्ड **लेफ्टिनेंट जनरल खालिद अहमद किदवई** ने कहा था...

“भारत की विशाल सेना से मुकाबले के लिए टैक्टिकल परमाणु हथियार बनाए गए हैं।”

2015 में पाकिस्तान के **विदेश सचिव एजाज चौधरी** ने भी कहा था कि...

“पाकिस्तान ने भारत की पॉलिसी का सामना करने के लिए ही कम दूरी के हथियार बनाए हैं।”

जमीन, हवा और पानी से परमाणु हमला कर सकता है भारत

भारत एक न्यक्लियर ट्रायड देश है। यानी देश के पास जमीन, हवा और पानी तीनों आयामों से परमाणु हमला करने की क्षमता है। पाकिस्तान न्यूक्लियर ट्रायड नहीं है।

जमीन से न्यूक्लियर अटैक

भारत के पास पृथ्वी-II और अग्नि मिसाइलें हैं। इनसे 5,200+ किमी दूर निशाना लगाया जा सकता है।

भारत अग्नि-VI मिसाइल डेवलप कर रहा है, जिसकी रेंज 6,000 किमी तक होगी। वहीं पाकिस्तान की सबसे ताकतवर शाहीन-III मिसाइल से 2,750 किमी तक ही न्यूक्लियर अटैक किया जा सकता है।

मिसाइल	रेंज (किमी)
पृथ्वी-II	350
अग्नि-I	700+
अग्नि-II	2,000+
अग्नि-III	3,200+
अग्नि-IV	3,500+
अग्नि-V	5,200+

हवा से न्यूक्लियर अटैक

भारत के पास मिराज और जगुआर जैसे फाइटर जेट हैं, जिनके जरिए हवा से 1,800 किमी तक परमाणु हथियार दागे जा सकते हैं।

राफेल विमान से 2000 किमी तक न्यूक्लियर अटैक किया जा सकता है, लेकिन अभी ये क्षमता भारत के पास नहीं है। वहीं पाकिस्तान के फाइटर जेट 2,100 किमी तक न्यूक्लियर अटैक कर सकते हैं।

मिसाइल (फाइटर जेट)	रेंज (किमी)
वज्र (मिराज 2000H)	1,850

मिसाइल (फाइटर जेट)	रेंज (किमी)
शमशेर (जगुआर IS/IB)	1,600

पानी से न्यूक्लियर अटैक

INS अरिहंत और INS अरिघात जैसी पनडुब्बियों से भारत 3,500 किमी की रेंज तक समुद्र से परमाणु हथियार दाग सकता है। भारत के पास ब्रह्मोस और निर्भय जैसी क्रूज-बेस्ड मिसाइलें भी हैं।

इसके अलावा K-5 और K-6 जैसी मिसाइलें डेवलप की जा रही हैं, जो 6,000+ किमी तक मार कर सकेंगी। वहीं पाकिस्तान बाबर-3 मिसाइल डेवलप कर रहा है, जो सबमरीन बेस्ड क्रूज मिसाइल है।

मिसाइल	रेंज (किमी)
धनुष	400
K-15	700
K-4	3,500

Source: Atomic Archive & Bulletin of the Atomic Scientists

क्या भारत को ‘नो फर्स्ट यूज’ की पॉलिसी बदलनी चाहिए?

भारत की न्यूक्लियर पॉलिसी में 2003 के बाद कोई बदलाव नहीं हुआ है।

2019 में पांचवें इंटरनेशनल आर्मी स्काउट मास्टर्स कॉम्पिटिशन के दौरान पोकरण में **रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह** ने इसमें बदलाव के संकेत दिए थे।

उन्होंने कहा था...

“भारत परमाणु हथियारों के **'पहले इस्तेमाल न करने'** की नीति पर अभी भी कायम है, लेकिन भविष्य में क्या होता है यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है।”

रिटायर्ड ग्रुप कैप्टन टीपी श्रीवास्तव के मुताबिक...

“नेशनल सिक्योरिटी में सेंध लगने की स्थिति में भारत को हर हथियार इस्तेमाल करने का संकल्प लेना चाहिए। अब समय आ गया है कि हम अपनी पॉलिसी को **'पहले इस्तेमाल न करने'** से बदलकर **'जरूरत के हिसाब से पहले इस्तेमाल'** की ओर ले जाएं।'”

ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन के फेलो और **सिक्योरिटी एनालिस्ट जॉय मित्रा** के मुताबिक...

“भारत को अपने न्यूक्लियर डॉक्टरीन में बदलाव कर चीन और पाकिस्तान जैसे देशों के लिए अलग पॉलिसी अपनानी चाहिए।ऐसा कर भारत **'नो फर्स्ट यूज'** पॉलिसी को अपनाते हुए पड़ोसी देशों से टकराव ले सकता है।'”

अमेरिकी थिंकटैंक विल्सन सेंटर में **रिसर्च फेलो योगेश जोशी** के मुताबिक...

“नो फर्स्ट यूज की पॉलिसी को छोड़ना भी ताकत का संकेत होगा और शायद इस बात की संभावना कम हो जाएगी कि भारत को अपनी नई सैन्य क्षमताओं का इस्तेमाल शुरू करने की जरूरत पड़े।'”

संडे रिपोर्टर के लिए स्वत्वाधिकारी, मालिक, प्रकाशक, मुद्रक व प्रधान सम्पादक रीनू जैन, पाल रोड, जोधपुर से मुद्रित तथा ई-123, बेसमेंट सुदर्शन कॉम्पलेक्स, कल्पतरू शॉपिंग सेंटर, रेजिडेंसी रोड, जोधपुर (राज) से प्रकाशित। प्रबंध सम्पादक- अभिषेक जैन, सम्पादकीय प्रभारी- डॉ. सुरेश खटनावलिया (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), R.N.I. No. RAJHIN/2012/45274, मोबाइल नंबर-07239963000, ईमेल- sundayreporter123@gmail.com

Happy Birthday

Kirti Maheshwari

28.04.2025

CA Nagina Malani

28.04.2025

Reeta Malik

28.04.2025

Rajesh Soni

29.04.2025

Vineeta Bhansali

29.04.2025

Deepak Sony

30.04.2025

Ridhi Bhansali

30.04.2025

Om Kothari

01.05.2025

Priti Lohiya

01.05.2025

Shivani Sharma

01.05.2025

Hindu Singh Sodha

02.05.2025

Chakshu Shrimali

03.05.2025

Anju Salecha

04.05.2025

Kavita Khemnani

04.05.2025

Romil Bhansali

04.05.2025

Please send your or your relative s
Birthday & Marriage Anniversary Photos
for our upcoming edition
Contact Number: 9829005820
E-mail: sundayreporter123@gmail.com
FREE

हिन्दू सेवा मण्डल जोधपुर ने मनाया शताब्दी वर्ष समारोह

जोधपुर। हिन्दू सेवा मण्डल जोधपुर का शताब्दी वर्ष का समारोह सम्पन्न हुआ। अतिथियों द्वारा योगेश्वर श्रीकृष्ण के समक्ष द्विपज्जवलीत कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया । हिन्दू सेवा मण्डल जोधपुर के

SUNDAY रिपोर्टर

प्रधानमंत्री विष्णुचन्द्र प्रजापत ने बताया की मण्डल अपना 100 वर्ष पूर्ण कर 101 वें वर्ष में प्रवेश करने पर घण्टाघर के प्रागण में सैनाचार्य अचलानंदगिरी महाराज के सान्निध्य में पूजा अर्चना कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया कार्यक्रम मे विशेष अतिथि के रूप में सूरसागर विधायक देवेन्द्र जोशी थे। समारोह की अध्यक्षता मण्डल प्रधान महेश कुमार जाजड़ा ने की। इस अवसर पर विधायक देवेन्द्र जोशी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज के समय में किसी भी सेवाभावी संस्थान का 100 वर्ष पूर्ण करना गर्व की बात है। इस अवसर पर मण्डल के संरक्षक हस्तीमल सारस्वत, राजस्थान ब्राहम्मण महासभा के जगदीश गौड़, कमल जोशी, राजस्थान जनरलिस्ट एसोसिएशन के प्रदेश महामंत्री सुरेश पारीक ने सम्बोधित किया ।

मण्डल की स्थापना

हिन्दू सेवा मण्डल जोधपुर की स्थापना 01 मई, 1925 की मे की गई थी उस समय सम्पूर्ण विश्व प्लेक की महामारी से ग्रस्त था मृतकों शवों के अम्बार लग गये थे। पक्षी नोच-नोच कर खाते थे। ऐसे समय महन्त लादूराम, महन्त नृसिंहदास, तुलसीदास गाँधी सहीतन अन्य कार्यकर्ताओं ने मृतकों का अन्तिम संस्कार किया तब से लेकर आज दिन तक मण्डल द्वारा लावारिश एवं असहाय मृतकों का अन्तिम संस्कार करता आ रहा है।

विभिन्न सेवा कार्य

मण्डल अपने सौ वर्षों के सफर में प्राकृतिक आपदा, अकाल, बाढ़, भूकम्प से समय पीड़ितों तक राशन सामग्री पहुंचाना, मारवाड़ का कुंभ भोगीशैल परिक्रमा यात्रा का आयोजन व संचालन करना, पानी की प्याऊ का संचालन करना, सर्वजातीय मोक्षधाम का संचालन, रामदेव मेले में निःशुल्क भोजन, प्राथमिक उपचार सहित विभिन्न प्रकार के कार्य करता है।

दो महामारी का साक्षी मण्डल

हिन्दू सेवा मण्डल जोधपुर 1920 के समय प्लेग की महामारी में अपनी सेवाएं देने एवं 2020 में वैश्विक महामारी कोविड-19 के समय विष्णुचन्द्र प्रजापत के नेतृत्व में एवं राकेश गौड़, ताराचंद शर्मा, यतिन्द्र प्रजापत, नरेन्द्र गहलोत सहीत अन्य कार्यकर्ताओं द्वारा मृतकों का अन्तिम संस्कार, शहर में हाईपोक्लोराइड स्प्रे, एन-95 मास्क वितरण, मेडिकल किट वितरण, सहीत चोदह प्रकार की सेवाए प्रदान की गई ।

समारोह में यह थे उपस्थित

प्रधान महेश कुमार जाजडा, उपप्रधान डॉ. भेरूप्रकाश दाधीच, प्रधानमंत्री, विष्णुचन्द्र प्रजापत, कोषाध्यक्ष कैलाश जाजू, संस्कारमंत्री राकेश गौड, मंत्री तुलसीदास वैष्णव, मदन सैन, सुरेश पारीक, प्रेमराज खीवसरा, दिनेश कुमार रामावत, महेन्द्रसिंह तंवर, नरेन्द्रसिंह गहलोत, सुरेन्द्रसिंह सांखला, यतिन्द्र प्रजापत, हन्वतराज गॉच्छा, महेश गहलोत, सहीत मण्डल के आजीवन सदस्य व कार्यकर्ता मौजूद थे ।

लायंस क्लब जोधपुर एक्टिव 14 को सेलिब्रेट करेगा मदर्स डे

जोधपुर। लायंस क्लब जोधपुर एक्टिव का मदर्स डे का रजिस्ट्रेशन 6 मई को निफ्ट में होगा। रजिस्ट्रेशन लायंस क्लब जोधपुर एक्टिव की तरफ से 14 मई को कोहिनूर के

SUNDAY रिपोर्टर

हीरे एक सराहना बेस्ट मादर सम्मान समारोह एक होटल में होने जा रहा है। प्रतियोगिता बिल्कुल निशुल्क रखी गई है। इसके लिए बेस्ट मॉम को मोमेंटो माला और स्वरुचि भोज के लिए आमंत्रित किया जाएगा और इसके लिए कार्यक्रम में रजिस्ट्रेशन से सम्मान तक एकदम निःशुल्क रखा गया है।

कार्यक्रम संयोजिका एवं लायंस क्लब अध्यक्ष उषा गर्ग ने बताया कि निफ़्ट मसूरिया बाबा रामदेव मंदिर के सामने 6 मई को रजिस्ट्रेशन 3 से 5बजे तक रखा गया है जो माताएं बेस्ट मॉम में अपना नाम और इंट्रोडक्शन राउंड होगा। यहां पर अपना परिचय अपने बारे में बताने का मौका मिलेगा। उनको अपने को बेस्ट कैसे-कैसे काम किए दो-दो मिनट दिए जाएंगे। सबको बोलने के लिए बारे में बता सकेंगे । कार्यक्रम में जूरी के रूप में निफ्ट के डायरेक्टर नवीन मोहनोत होंगे और फैशन डिजाइनर डॉक्टर शालिनी राजेंद्र शर्मा होंगे। रॉयल प्रॉपर्टीज के रूबी सलूजा डायरेक्टर वह बिजुरी मेंबर एवं अतिथि होंगे। पार्षद भंवर भलाई बिजुरी मेंबर एवं अतिथि होंगे। कार्यक्रम में 14 में को मल्टीपल कौंसिल अध्यक्ष एमसीसी डॉक्टर संजीव जैन 14 मई को मुख्य अतिथि होंगे। कार्यक्रम 6 मई को दोपहर 3:00 बजे से 5:00 बजे तक चयन की गई मदर का होगा। इस कैटेगरी में जो मदर का चयन और भी जगह किया जा चुका है सब की लिस्ट एक साथ डिक्लेअर की जाएगी।

Happy Wedding Anniversary

Smt. Rounika & Ronak Dhoot

29 April

संपादकीय

जाति की जटिलताएंः गणना, राजनीति और सामाजिक संतुलन का द्वंद्व

राजनीतिक मामलों की केंद्रीय कैबिनेट कमेटी ने बुधवार को अगली जनगणना में जाति की गणना को शामिल करने का निर्णय लिया। आजादी के बाद यह पहला मौका होगा जब जनगणना के दौरान जाति के आंकड़े संग्रहीत किए जाएंगे। हालांकि अनुसूचित जाति और जनजाति के आंकड़े दर्ज किए जाते हैं लेकिन व्यापक स्तर पर जातिगत आंकड़े इससे पहले 1931 की जनगणना में एकत्रित किए गए थे। इस घोषणा को दोनों प्रमुख दलों का समर्थन मिला है जो बताता है कि जाति जनगणना की राह में कोई मुश्किल नहीं है। वास्तव में 2024 के लोक सभा चुनावों में जाति जनगणना कांग्रेस सहित विपक्षी दलों के सबसे प्रमुख चुनावी वादों में से एक था। चूंकि सरकार ने अगली जनगणना में जाति को दर्ज करने का निर्णय ले लिया है इसलिए अब इसके परिणामों पर चर्चा करना भी आवश्यक है।

2026 से पहले हो सकती है नई जनगणना, राजनीतिक समर्थन के बीच उठे सामाजिक और आर्थिक चिंता के सवाल

हालांकि, उससे पहले यह ध्यान देना आवश्यक है कि जल्द से जल्द जनगणना करना भी आवश्यक है। कोविड-19 महामारी के कारण 2020 में होने वाली दशकीय जनगणना को टाल दिया गया था लेकिन यह समझना मुश्किल है कि हालात सामान्य होने के बाद भी सरकार उसे क्यों टालती जा रही है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के आंकड़ों के मुताबिक 2011 में जब भारत में पिछली जनगणना हुई थी तब हमारी अर्थव्यवस्था का आकार 1.8 लाख करोड़ डॉलर था। यह संभव है कि जिस समय तक अगली जनगणना पूरी होगी या उसके परिणाम आने शुरू होंगे तब तक भारत पांच लाख करोड़ डॉलर की अर्थव्यवस्था बन चुका होगा। यह एकदम अलग देश होगा। ऐसे में यह अहम है कि जनगणना नियमित हो।

यही नहीं, जाति को शामिल करने की अतिरिक्त आवश्यकता को देखते हुए इसमें और देरी हो सकती है। ऐसे में यह भी संभव है कि अब जनगणना शायद 2026 के बाद ही हो सके और संविधान के मुताबिक संसदीय सीटों के नए परिसीमन का आधार बने। ऐसे में इसके परिणाम देश में सामाजिक विभाजन को बढ़ाने वाले साबित हो सकते हैं और उनका बहुत सर्तकता के साथ प्रबंधन करना होगा। दक्षिण भारत के राज्यों ने भी नियमित रूप से यह चिंता जताई है कि लोक सभा में उनकी हिस्सेदारी कम की जा सकती है। यह संभव है कि कुछ राजनीतिक दल विधायिका में भी जाति आधारित आरक्षण की मांग करें। एक स्तर पर जातीय आंकड़े संग्रहीत करना तथा अन्य सामाजिक-आर्थिक आंकड़े हासिल करना उपयोगी हो सकता है क्योंकि यह नीति निर्माण में मददगार होगा। बहरहाल, जोखिम यह है कि जाति के आंकड़ों का इस्तेमाल राजनीतिक कारणों से भी किया जा सकता है। हालांकि यह तो अभी भी हो रहा है। ताजा आंकड़े इस खाई को और बढ़ा सकते हैं। कम तादाद वाले जातीय समूहों को हाशिए पर धकेला जा सकता है।

जाति जनगणना के अन्य संभावित परिणामों में अधिक आरक्षण की मांग भी शामिल है। वास्तव में इसकी शुरूआत हो भी चुकी है। लोक सभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने सुझाव दिया है कि आरक्षण पर सीमा समाप्त की जानी चाहिए और निजी शैक्षणिक संस्थानों में भी कोटा लागू किया जाना चाहिए। व्यापक स्तर पर देखें तो 2025 में जाति जनगणना का इतना महत्त्वपूर्ण होना बताता है कि हम अभी तक कुछ बुनियादी चीजों को दुरुस्त करने में विफल रहे हैं। कई समूहों के लिए जाति जनगणना और आरक्षण में हिस्सेदारी आगे बढ़ने की एक उम्मीद है।

SUNDAY रिपोर्टर

लेखक
प्रो. संजय द्विवेदी

जरूरी है मीडिया का भारतीयकरण

हमें सोचना होगा कि आखिर हमारी मीडिया प्रेरणाएं क्या हैं? हम कहां से शक्ति और ऊर्जा पा रहे हैं..

हमें सोचना होगा कि आखिर हमारी मीडिया प्रेरणाएं क्या हैं? हम कहां से शक्ति और ऊर्जा पा रहे हैं। हमारा संचार क्षेत्र किन मानकों पर खड़ा है। पश्चिमी मीडिया के मानकों के आधार पर खड़ी हमारी मीडिया के लिए नकारात्मकता, संघर्ष और विवाद के बिंदु खास हो जाते हैं। यह 'शब्द हिंसा' का समय है। बहुत आक्रमक, बहुत बेलगाम। ऐसा लगता है कि टीवी न्यूज मीडिया ने यह मान लिया है कि शब्द हिंसा में ही उसकी मुक्ति है। चीखते-चिल्लाते और दलों के प्रवक्ताओं को मुर्गों की तरह लड़ाते हमारे एंकर सब कुछ स्क्रीन पर ही तय कर लेना चाहते हैं।

निजी जीवन में बेहद आत्मीय राजनेता, एक ही कार में साथ बैठकर चैनल के दफ्तर आए प्रवक्तागण स्क्रीन पर जो दृश्य रचते हैं, उससे लगता है कि हमारा सार्वजनिक जीवन कितनी कड़वाहटों और नफरतों से भरा है। किंतु स्क्रीन के पहले और बाद का सच अलग है। बावजूद इसके हिंदुस्तान का आम आदमी इस स्क्रीन के नाटक को ही सच मान लेता है। लड़ता-झगड़ता हिंदुस्तान हमारा 'सच' बन जाता है। मीडिया के इस जाल को तोड़ने की भी कोशिशें नदारद हैं। वस्तुनिष्ठता से किनारा करती मीडिया बहुत खौफनाक हो जाती है।

सूचना और खबर के अंतर को समझिए-

हमें सोचना होगा कि आखिर हमारी मीडिया प्रेरणाएं क्या हैं? हम कहां से शक्ति और ऊर्जा पा रहे हैं। हमारा संचार क्षेत्र किन मानकों पर खड़ा है। पश्चिमी मीडिया के मानकों के आधार पर खड़ी हमारी मीडिया के लिए नकारात्मकता, संघर्ष और विवाद के बिंदु खास हो जाते हैं। जबकि संवाद और संचार की परंपरा में संवाद से संकटों के हल खोजने का प्रयत्न होता है। हमारी परंपरा में सही प्रश्न करना भी एक पद्धति है। सवालों की मनाही नहीं, सवालों से ही बड़ी से बड़ी समस्या का हल खोजना है, चाहे वह समस्या मन, जीवन या समाज किसी की भी हो। इस तरह प्रश्न हमें सामान्य सूचना से ज्ञान तक की यात्रा कराते रहे हैं। आज 'सूचना' और 'ज्ञान' को पर्याय बनाने के जतन हो रहे हैं। सच यह है कि 'सूचना' तो समाचार,खबर या न्यूज का भी पर्याय नहीं है। सूचना कोई भी दे सकता है। वह कहीं से भी आ सकती है। सोशल मीडिया आजकल सूचनाओं से ही भरा हुआ है। किंतु ध्यान रखें खबर, समाचार और न्यूज के साथ जिम्मेदारी जुड़ी है। संपादकीय प्रक्रिया से गुजरकर ही कोई सूचना,समाचार बनती है। इसलिए संपादक और संवाददाता जैसी संस्थाएं साधारण नहीं है।

हर व्यक्ति नहीं हो सकता पत्रकार

यह कहना आजकल बहुत फैशन में है कि इस दौर में हर व्यक्ति पत्रकार है। हर व्यक्ति फोटोग्राफर है। हर व्यक्ति कम्युनिकेटर, सूचनादाता, मुखबिर हो सकता है, वह पत्रकार कैसे हो जाएगा? मेरे पास कैमरा है, मैं फोटो ग्राफर कैसे हो जाऊंगा। विशेष दक्षता और प्रशिक्षण से जुड़ी विधाओं को हल्का बनाने के हमारे प्रयासों ने ही हमारी मीडिया या संवाद की दुनिया को बहुत बड़ा नुक्सान पहुंचाया है। यह वैसा ही है जैसे कपड़े प्रेस करने वाले या प्रिंटिंग प्रेस वाले अपनी गाड़ियों पर 'प्रेस' का स्टिकर लगाकर घूमने लगें। मीडिया में प्रशिक्षण प्राप्त और न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता के बिना आ रही भीड़ ने अराजकता का वातावरण खड़ा कर दिया है। लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, बाबासाहेब आंबेडकर, पं. जवाहरलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय, माधवराव सप्रे जैसे उच्च शिक्षित लोगों द्वारा प्रारंभ और समाज के प्रति समर्पित पत्रकारिता वर्तमान में कहां खड़ी है। भारत सरकार के आग्रह पर प्रेस कौंसिल आफ इंडिया ने पत्रकारों की न्यूनतम शैक्षिक योग्यता के निर्धारण के लिए एक समिति भी बनाई थी, जिसके समक्ष मुझे भी अपनी बात रखने का अवसर मिला था। बाद में उस कवायद का क्या हुआ पता नहीं।

समाज की रूचि का करें परिष्कार

समाज की रुचि का परिष्कार और रूचि निर्माण भी मीडिया की जिम्मेदारी है। अपने पाठकों, दर्शकों को समय के ज्वलंत मुद्दों पर अपडेट रखना, उनकी बौद्धिक, नागरिक चेतना को जागृत रखना भी मीडिया का काम है। जबकि देखा यह जा रहा है कि पाठकों की पसंद के नाम पर कंटेंट में गिरावट लाने की स्पर्धा है। ऐसे कठिन समय में मीडिया के दायित्वबोध और सरोकारों पर बातचीत बहुत जरूरी है। प्रिंट मीडिया ने भी साहित्य, कलाओं, प्रदर्शन कलाओं और मनुष्य बनाने वाली सभी विधाओं को अखबारों से निर्वासन दे दिया है। मीडिया सिर्फ दर्शक बना रहे यह भी ठीक नहीं। उसे राष्ट्रीय भावना और जनपक्ष के साथ खड़े रहना चाहिए।

देखा जाए तो समाज में फैली अशांति, स्पर्धा, लालसाओं और संघर्ष के बीच विचार के लिए सकारात्मक मुद्दे उठाने ही होंगे। मीडिया खुद अशांत है और गहरी स्पर्धा के कारण सही -गलत में चुनाव नहीं कर पा रहा है। ऐसे में मीडियाकर्मियों की जिम्मेदारी है कि खुद भी शांत हों और संवाद की शुचिता पर काम करें। वसीम बरेलवी लिखते हैं-

कौन सी बात कहां, कैसे कही जाती है।
वो सलीका हो तो हर बात सुनी जाती है।

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के जनसंचार विभाग में आचार्य और अध्यक्ष हैं।)

(इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

बातों की बात

चैनलों ने हर घर को युद्ध का मैदान बना दिया...

SUNDAY रिपोर्टर

डॉ. सुरेश खटनावलिया

उम्मीदें मत बढ़ाओ..आक्रोश मत भडकाओ.. इधर प्रधानमंत्री कल्पना से परे सजा देने का ऐलान कर रहे हैं.. अपनों से जुदा हुए परिजनों को हर हाल में न्याय दिलाने का ढांढस बंधा रहे हैं.. उनके दो वक्तव्यों से ही देश उम्मीदों से बढकर अंजाम के बारे में सोचने लगा है.. पाकिस्तान में घुसकर मारने और आतंकियों को मिटाने के लिए दिन गिन रहा है.. उधर चैनल थोथी चिंघाड़ गुंजा रहे हैं.. पाकिस्तान को मेमना बता रहे हैं और देशवासियों को आक्रोश का शेर बना रहे हैं.. देश के सारे चैनल रिटायर्ड फौजियों से लेकर नेताओं का मजमा जमा रहे हैं.. हम साथ-साथ हैं के नारे लगवा रहे हैं तो चौराहों पर चकल्लस करते लोग चैनलों के माइक के सामने जुबानी तोप चलाते नजर आ रहे हैं..सेना से लेकर सरकार तक को ज्ञान बांटते और घुसकर मारने की ताकत दिखाते नादान शेर दो देशों की संवेदनशीलता को ठिकाने लगा रहे हैं और युद्ध की विभीषिका को मजाक बना रहे हैं..इसी आक्रोश को जहां चैनल अपनी टीआरपी का हथियार बना रहे हैं, वहीं प्रधानमंत्री मोदी के वक्तव्यों से पूरा देश उम्मीदों के शिखर पर जा पहुंचा है..लेकिन हकीकत आक्रोश और उम्मीदों से हटकर कुछ और ही है..भारत और पाकिस्तान दोनों ही देश जहां परमाणु-संपन्न हैं, वहीं पाकिस्तान की ताकत हथियारों से ज्यादा हिमाकतों में है.. वहां पगलाए नेताओं और गैरजिम्मेदार सरकार को न अपने देश की चिंता है और न ही अवाम की.. कंगाली की हद तक पहुंच चुके पाकिस्तान में न लोकतंत्र है और न ही जनता की चुनी हुई सरकार..दोनों ही स्थितियों के चलते भारत में हुआ आतंकी हमला और भारत का गुरार्ना वहां की जबरिया सरकार के लिए वरदान बन गया है..युद्ध के चलते डरे हुए पाकिस्तानी और विरोध करते विपक्षी भी अब सरकार का साथ और समर्थन के लिए मजबूर हो गए..ऐसे में भारत का एक भी सैन्य प्रतिरोध उनके हौसलों और हिमाकतों को बढ़ा देगा.. भारत विरोधी चीन जैसे देश जहां पाक के साथ हो जाएंगे, वहीं अमेरिका और ब्रिटेन जैसे देश मध्यस्थ बनने की कोशिश में जुट जाएंगे और दुनिया के सारे देश भारत को कमजोर मानने लग जाएंगे..ऐसे में इस वक्त जोश नहीं होश का हमला होना चाहिए..सीधे हमले के बजाय उन्हीं के देश के लोगों से आतंकियों को मरवाना चाहिए..उनके खिलाफ उसी तरह विद्रोही फौजें बनवाना चाहिए, जैसे बलूचिस्तान में बलूच विद्रोही और पाकिस्तानी कश्मीर में स्थानीय लोग सेना से लोहा ले रहे हैं..पाकिस्तानी फौजियों से लेकर आतंकी भी एक-एक कर मिट रहे हैं.. यह वो जख्म है जो पाकिस्तान को घायल तो कर रहा है, लेकिन हमलावर दिख नहीं रहा है..ऐसे में यदि हमलावर का चेहरा पाकिस्तान को मिल जाएगा तो उसे मरहम लगाने चीन जैसा हमारा हर शत्रु खड़ा हो जाएगा..दुनिया में ताकत की तरह उभरते भारत को जंग में जूझते देख हमारा दोस्त हो या दुश्मन हमें उकसाएगा..ऐसे में चैनलवीरों को आक्रोश का पागलपन समेटना चाहिए, वहीं जनता को भी सरकार द्वारा सेना को दी गई खुली छूट और वक्त के साथ लक्ष्य के निर्धारण का इंतजार करना चाहिए..।

Cartoon Corner

जब बेटी बन जाए मां की प्रोटेक्टर

मां तो हमेशा से ही अपनी बेटी का खयाल रखती आई है, उसे संभालती आई है। लेकिन बेटियां जब बड़ी हो जाती हैं, तो बेटियां भी अपनी मां को ले कर बहुत प्रोटैक्टिव हो जाती हैं। वे खुद उन की मां बन बैठती हैं। उन की हर बात का खयाल रखना, उन के सारे गम बांटना आदि करने लगती हैं। वह मां की हमराही बन जाती है। मां अपनी हर छोटी-बड़ी शिकायत बेटी से कहने लगती है। जब बेटी अपनी मां की देखभाल करने वाली बन जाती है, तो यह एक मजबूत मां-बेटी के बंधन का प्रतीक है।

माता-पिता के अलगाव के दौरान बेटी के द्वारा मां को संभालने का अर्थ है कि बेटी अपनी मां को भावनात्मक और व्यावहारिक रूप से देती सहारा

रीनू जैन

SUNDAY रिपोर्टर

जोधपुर। मां तो हमेशा से ही अपनी बेटी का खयाल रखती आई है, उसे संभालती आई है। लेकिन बेटियां जब बड़ी हो जाती हैं, तो बेटियां भी अपनी मां को ले कर बहुत प्रोटैक्टिव हो जाती हैं। वे खुद उन की मां बन बैठती हैं. उन की हर बात का खयाल रखना, उन के सारे गम बांटना आदि करने लगती हैं. वह मां की हमराही बन जाती है। मां अपनी हर छोटी-बड़ी शिकायत बेटी से कहने लगती है। जब बेटी अपनी मां की देखभाल करने वाली बन जाती है, तो यह एक मजबूत मां-बेटी के बंधन का प्रतीक है। यह एक ऐसी स्थिति है जहां बेटी अपनी मां की भावनात्मक और व्यावहारिक जरूरतों को पूरा करने में मदद करती है, खासकर जब मां को मदद की आवश्यकता होती है. और ऐसे में मांबेटी का रिश्ता और भी ज्यादा मजबूत हो जाता है. आइए, जानें कैसे :

माता-पिता का सैपरेशन होता है, तो बेटी मां को संभालती

माता-पिता के अलगाव के दौरान बेटी के द्वारा मां को संभालने का अर्थ है कि बेटी अपनी मां को भावनात्मक और व्यावहारिक रूप से सहारा देती है। अलगाव की कठिन अवधि के दौरान मां को भावनात्मक और शारीरिक रूप से समर्थन देती है, जिस में मां को अपने अलगाव के बाद अपनी जिम्मेदारियों को संभालने में मदद करना भी शामिल है। वह मां को एहसास दिलाती है कि आप का परिवार टूटा नहीं है, मैं हूं आप का परिवार. वह अपने और भाईबहनों को भी मां के साथ संभालती है। अगर माता-पिता में डिवोर्स की प्रक्रिया चल रही है तो भी बेटी ऐसे में मां का साथ देती है, उस के कोर्टकचहरी के काम कराती है. उसे अच्छा वकील ढूंढ़ने में मदद करती है।

सैपरेशन के बाद घर की पूरी जिम्मेदारी संभाल लेती बेटियां

अगर बेटी थोड़ी बड़ी है, तो वह अपने भाईबहनों की पढ़ाईलिखाई, उन की स्कूलकालेज की जिम्मेदारी, घर के बिल जमा करना, किचन देखना सब काम खुद ही करने लगती है. उसे लगता है कि मां अकेले क्या-क्या संभालेगी, इसलिए वह कब मां का दूसरा हाथ बन जाती है उसे खुद भी पता नहीं चलता।

फाइनैंशियली भी सपोर्ट करती बेटी

अगर बेटी की अच्छी जौब लग गई है और वह कमाती है तो वह मां को कभी किसी चीज की कमी नहीं होने देती. मां की हर जरूरत खुद पूरा करती है। उस के लिए कपड़े लाने से ले कर उस के हर शौक को बिन बोले ही पूरा करती है।

इमोशनली प्रोटैक्ट करती बेटियां

कई बार जिंदगी में कुछ चीजें ऐसी हो जाती हैं जब मां बिलकुल टूट जाती है फिर चाहे वह पति से अलगाव होना हो या फिर बेटेबहू के द्वारा अपमानित होना हो। ऐसे मौके पर एक बेटी ही अपनी मां को संभाल सकती है। बेटी मां के साथ बात कर सकती है, उन्हें गले लगा सकती है और उन्हें आश्वस्त कर सकती है कि वह अकेली नहीं है। बेटी मां के साथ समय बिताती है, उस की बातें सुनती है और उसे समझाती है। वह मां को खुश करने के लिए हर छोटीछोटी बातें करती है।

बीमारी में ख्याल रखती बेटी

अगर मां बीमार हो तो बेटी अपनी पूरी जान लगा देती है. उस का समय समय पर पूरा हैल्थ चैकउप करवाती है। उस की दवाओं का ध्यान रखती है. भले ही मां के बुलाने पर वह किचन में न जाने के बहाने ढूंढ़ती हो लेकिन मां के बीमार होने पर वही बेटी यूट्यूब पर से ढूढ़ढूंढ़ कर रैसिपी बनती है, अपनी मां का सिर दबाती है और उसे दादी मां की तरह बिस्तर से न हिलने तक के हजारों इंस्ट्रक्शन दे डालती है।

मां की राजदार होती बेटियां

अपने पति और बेटे तक से जो बातें मां शेयर नहीं कर पाती है वे बातें वह अपने बेटी से शेयर करती है. पति को ले कर कोई शिकायत है या सास की शिकायत लगानी हो वह डाइरैक्ट अपने मन की भड़ास बेटी के सामने निकालती है। बाकी लोगों को कुछ नहीं कहती है। अपने घर के खर्चों में से बचाए हुए पैसों को वह बैंक में या पोस्ट औफिस में बेटियों के साथ ही जमा कराती है। बेटियां ये बात कभी अपने पापा को नहीं बतातीं. किसी बात को ले कर कोई तकलीफ है या परेशानी है तो शादीशुदा बेटी को फोन कर अपने दिल का हाल बताती है और अपना मन हलका करती है. बेटियां भी मां की हर बात को ध्यान से सुनती हैं और उन्हें संभालती हैं।

प्रोपर्टी, पैसों आदि की देखभाल भी करती बेटियां

अगर मां के नाम पर कोई मकान या दुकान है और वह रेंट पर दिए हुए हैं तो हर महीने आने वाले रेंट को लेना, उसे बैंक में जमा करना. किराएदारों से डील करना वगैरह बेटी के काम हो जाते हैं।

मां को पैंपर भी करती बेटी

अकसर मां दिनभर घर के कामों में ही बिजी रह जाती है और कई बार इसी वजह से वह बेटी को भी वक्त नहीं दे पाती। लेकिन बेटी मां के साथ वक्त बिताने का मौका ढूंढ़ ही लेती है। वह अपनी मां की स्किन और ब्यूटी को ले कर भी बहुत सीरियस होती है। वह अपनी मां को बढ़ती उम्र में झुर्रियों के साथ नहीं देखना चाहती इसलिए वह खुद अपनी मां के साथ पार्लर और स्पा जाने की प्लानिंग करती है ताकि मां खुद को रिलैक्स करें।
फेशियल, मेनीक्योर, पेडीक्योर वगैरह सभी चीजों से अंदर से तरोताजा महसूस करें. वह खुद भी मां के साथ फेशियल आदि काम करवाती है। इस दौरान साथ में बातचीत करने का भी अच्छाखासा वक्त मिलता है, जिस में मांबेटी एकदूसरे से अपनी फीलिंग्स शेयर कर सकती हैं. बेटी मां को फिल्म देखने ले जाती है, उस के साथ शौपिंग करती है। हिल स्टेशन घूमने जाती है।

सूरज को मना लेंगे

व्यंग्य

SUNDAY रिपोर्टर

संतोष उत्सुक

हमारे ज्योतिषी विज्ञान की बातें कर कर लोगों को रिझा रहे हैं उधर हम से बहुत छोटे देश जापान के वैज्ञानिक डरावने वाली बड़ी बड़ी भविष्यवाणी कर रहे हैं। उनका कहना है कि धरती पर जीवन, एक दिन खत्म हो जाएगा। उनकी बातें सुनकर डर लगने लगा है।

विदेशियों का तो पता नहीं लेकिन विश्वगुरुओं के देश में, पता नहीं कैसी कैसी चौरासी करोड़ योनियां भुगतने के बाद, सिर्फ एक बार ही मानव जीवन मिलता है। इस महा विरली योनी यानी मानव जन्म में जितनी हो सकती है, हम जी भर कर मनमानी कर रहे हैं। दूसरों के दुखों में सुखी होकर संतुष्टि पा रहे हैं। अपनी आने वाली कई पीढ़ियों के लिए धन इक्कठा कर रहे हैं।

हमारे ज्योतिषी विज्ञान की बातें कर कर लोगों को रिझा रहे हैं उधर हम से बहुत छोटे देश जापान के वैज्ञानिक डरावने वाली बड़ी बड़ी भविष्यवाणी कर रहे हैं। उनका कहना है कि धरती पर जीवन, एक दिन खत्म हो जाएगा। उनकी बातें सुनकर डर लगने लगा है। वे कह रहे हैं कि सूर्य की उर्जा और तापमान बढ़ता जाएगा। एक समय आएगा जब सूर्य का आकार इतना बड़ा हो जाएगा कि बुध, शुक्र और पृथ्वी को निगल जाएगा। कितनी गलत बात है।

फिलहाल हमें बुध और शुक्र से कुछ लेना देना नहीं है। हमारे पास अपना ही बहुत कुछ है जिसे हम संभाल नहीं पा रहे। लेकिन सूरज महाराज को चाहिए कि पृथ्वी पूरी न निगलें। कम से कम हमारा देश रहने दें। सूर्यजी पता ही होगा कि हजारों साल से हम उनको भगवान का दर्जा देते हैं उनकी पूजा करते हैं। सुबह सुबह सूर्यदेव को जल चढ़ाने की समृद्ध परम्परा है। वह बात अलग है कि हम दिन रात मेहनत कर, भागदौड़ कर, जुगाड़ कर सफल होने के लिए अनैतिक रास्ते इख्तियार करते हैं। कई तरह के पाप कर धार्मिक अनुष्ठान करवाते हैं। मेहनत से की गई हेराफेरी की कमाई का हिस्सा भगवान को भी उपहार देते हैं।

चांद पर बसने का ख़्वाब, अरबों खरबों खर्चने के बाद भी अभी तो पूरा नहीं हुआ। हमारे पास वहां के चित्र, मिटटी और छोटी मोटी चट्टानें हैं। वह बात दीगर है कि कुछ लोगों ने वहां प्लाट भी खरीद लिए हैं। शायद नक़्शे भी बनवा लिए होंगे। अब कह रहे हैं कि पृथ्वी पर बढ़ रहे तापमान, जलवायु के खतरे से मौसम चक्र बिगड़ने के कारण कुदरती आपदाएं बढ़ रही हैं। महा मुसीबत के समय में अगर धरती छोड़कर जाना ही पड़ा तो मंगल ग्रह ही सबसे उपयुक्त रहेगा। संभवत तभी वहां जीने के ख़्वाब उगाए जा रहे हैं।

वर्तमान बारे सोचना खतरों से खाली नहीं है। शक्तिशाली देश, लड़ते हुए दुनिया बर्बाद करने में सहयोग दे रहे हैं। जबरदस्त मारक हथियार उपलब्ध हैं। कृत्रिम बुद्धि ने नैसर्गिक बुद्धि पर कब्जा कर लिया है। नेता विकास के पीछे बिना हाथ धोए पड़े हैं। वैसे ज्यादा घबराने की जरूरत नहीं है। वैज्ञानिकों के अनुसार धरती पर जीवन एक अरब, दो हजार इक्कीस साल बाद खत्म होगा। पृथ्वी को निगलने में अभी पांच अरब साल लगेंगे। तब तक हम सूरज को मना ही लेंगे।

बात निराली मेरे शहर की

SUNDAY रिपोर्टर

आरती शर्मा
जोधपुर

बात निराली मेरे शहर की,
सूर्यनगरी और नील गगन की।
कुछ मुगली दमन, कुछ गर्मी लहू की,
राव, जसवंत, अजीत के जंग की।
लोक कथाएं, त्यौहार, फतेह के,
तीज, गणगौर संग रंग संक्रांति।
जन कहते बुरा है नीला,
पर शहर मेरा बड़ा रंगीला।
आवभगत में सबसे आगे,
लहजे में जिनके हुकुम और हां सा।
यहां साक्षात देवता विराजे,
और लगते मां चामुंडा के नारे।
कोई नहीं जोधाणा में ऐसा,
जग के गज सा विख्याता।

वो धर्म का चोला नहीं...

SUNDAY रिपोर्टर

गीतांजलि सोनी
जोधपुर

वो धर्म का चोला नहीं आतंक का चोला है
वो जिसे वो धर्म कहते है वो धर्म नहीं नफरत है , आतंक है
कोई धर्म कोई मजहब निर्दोष की हत्या की इजाजत नहीं देता
वो सिर्फ. हिंदू है इसलिए मार दिया गया, ये हत्या है इंसानियत की
हत्या है सभ्यता की, हत्या है आत्मा की
हत्या है आँखो की शर्म, और संस्कार की..
अब धर्म को नफरत का चोला पहनाकर
उसे इंसानियत से बड़ा बना दिया
क्या किसी निर्दोष की हत्या करके
अपने धर्म की रक्षा की जा सकती है??
अब घूमने के लिए भी इंसान होना काफी नहीं है?
धर्म पूछा जाएगा?
धर्म बनाया गया है इंसानियत की रक्षा करने के लिए..
ना की आतंकी हमले के लिए...

घर संसार में घुसते...

घर संसार में घुसते ही
पहचान बतानी होती है
उसकी आहट सुन
पत्नी बच्चे पूछेंगे 'कौन?'
'मैं हूँ' वह कहता है
तब दरवाजा खुलता है।
घर उसका शिविर
जहाँ घायल होकर वह लौटता है।
रबर की चप्पल को
छेद कर कोई जूते का खीला
उसका तलुआ छेद गया है।
पैर से पट्टी बॉंध सुस्ता कर कुछ खाकर
दूसरे दिन अपने घर का पूरा दरवाजा खोलकर
वह बाहर निकला
अखिल संसार में उसकी आहट हुई
दबे पाँव नहीं
खाँसा और कराहा
'कौन?' यह किसी ने नहीं पूछा
सड़क के कुत्ते ने पहचानकर पूंछ हिलाई
किराने वाला उसे देखकर मुस्कुराया
मुस्कुराया तो वह भी।
एक पान ठेले के सामने
कुछ ज्यादा देर खड़े होकर
उधार पान माँगा
और पान खाते हुए
कुछ देर खड़े होकर
फिर कुछ ज्यादा देर खड़े होकर
परास्त हो गया।

- विनोद कुमार

अब अर्जुन गांडीव उठा लो

SUNDAY रिपोर्टर

डॉ. हस्तीमल आर्य 'हस्ती'
जोधपुर

अब छोड़ो बनना वाक वीर
अब छोड़ो दिखावा मेरे शूर
अब वोट की राजनीति छोड़ो
अब पक्ष विपक्ष को संग जोड़ों
अब तो है सबक सिखाना होगा
मानवता का ध्वज उठाना होगा
अब दुत्कारों अब तो ललकारो
अब हर हाल नैस्तनाबूत करो।
अब दुत्कारों अब तो ललकारो.....

अब पुलवामा की पुनरावृत्ति न हों
अब पहलगांव अंतिम हमला हों
अब साधना पूंजीपतियों की छोड़
पकड़ लाओ भगोड़ों को जो है चोर
अब सबक सिखाना शुरू कर दो
पाक से सिंध ब्लूच जुदा कर दो
अब आतंकवाद की कमर तोड़ दो
अब आतंकवाद जड़ मूल मिटा दो। 1
अब दुत्कारों अब तो ललकारो......

अब इंदिरा सा शक्ति रूप सजा लो
अब कृष्ण सा सुदर्शन चक्र चला लो
ऐ मेरे अर्जुन तूं गांडीव धनुष उठा लो
जयद्रथ की पूरी हुई एक सौ गाली
अब सुदुर्शन जाना चाहिए न खाली
अब तो फेंक, काट दे गर्दन दुष्टों की
अब दिखा दे शक्ति भारतीय सेना की। 2
अब दुत्कारों अब तो ललकारो........

अब चाहे सामने हों कोई भी देश व्यक्ति
सच के साथ है, होंगी आधी उसकी शक्ति
अब तिरंगा कश्मीर पाक पर फहरा दो
स्वतः मिट जाएगा रोग हर कष्ट मिटा दो
विश्व के लिए भी यही होंगा शांति संदेश
जय-जय कार से गूंज उठेगा देश विदेश। 3
अब दुत्कारों अब तो ललकारो

क से कबूतर या...

SUNDAY रिपोर्टर

सीमा हिंगोनिया
अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक

बचपन में सबने सिखा
क से कबूतर
अ से अनार ,
आ से आम,,,
मुझे सिखाया
क से कचरा
का से काम ,
कू से कूड़ादान
आ से आराम हराम ,,,
सुबह सुबह
सब बच्चे जाते
विद्यालयों की ओर ,
मेरे नसीब में आए
नालियां ,
सड़के ,
कचरे से भरे मैदान ...,,,
बच्चों के हाथों में
किताब ,कलम
बस्ते देखे मैंने ,
पर मेरे हाथों में
थमाई गई
झाड़ू , तगाड़ी,
कचरे भरे पात्र,,
सबको सिखाया गया
ज से जहाज,
झ से झंडा ,
ऊंचा रहे तिरंगा अपना,,
मुझे सिखाया
ज से जल्दी जागो ,
झ से झाड़ू ,
त से तगारी,
उठो सफाई करो
चलाओ सफाई अभियान,,,
मैने निभाया
हर जिम्मा खुशी खुशी ,,
निकाला सब को
कचरे और गंदगी के ढेरों से बाहर
मेरा भारत महान,,,
मैं देश का भविष्य
मैं ही देश का वर्तमान
फिर भी
सब मिलकर भी
ना निकाल सके
मुझे इस मलिन ,
सफाई के दल दल से बाहर ,,,
न ही तुमने निकाला
अपने मन मस्तिष्क से
मेरे प्रति यह अमानवीय, दुर्व्यवहार,,
ना मिला सके मुझे
शिक्षा और विकास की
मुख्य धारा में
ना चला सके सब के साथ साथ,,,
मैं सफाई कर कर के भी रहा अस्वच्छ
अस्पृश्य हमेशा
और तुम गंदगी फैला फैला कर भी रहे स्वच्छ
स्पर्शय सदा सदा ..
फिर
कैसे बनेगा मेरा देश महान
कैसे बनेगा मेरा देश महान??

लब्ध व नवीन साहित्यकारों के लिए संडे रिपोर्टर बेहतरीन प्लेटफॉर्म है। इसके माध्यम से आप अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति को जन-जन तक पहुंचा सकते हैं।
Email:- sundayreporter123@gmail.com Whatsapp: 7239963000

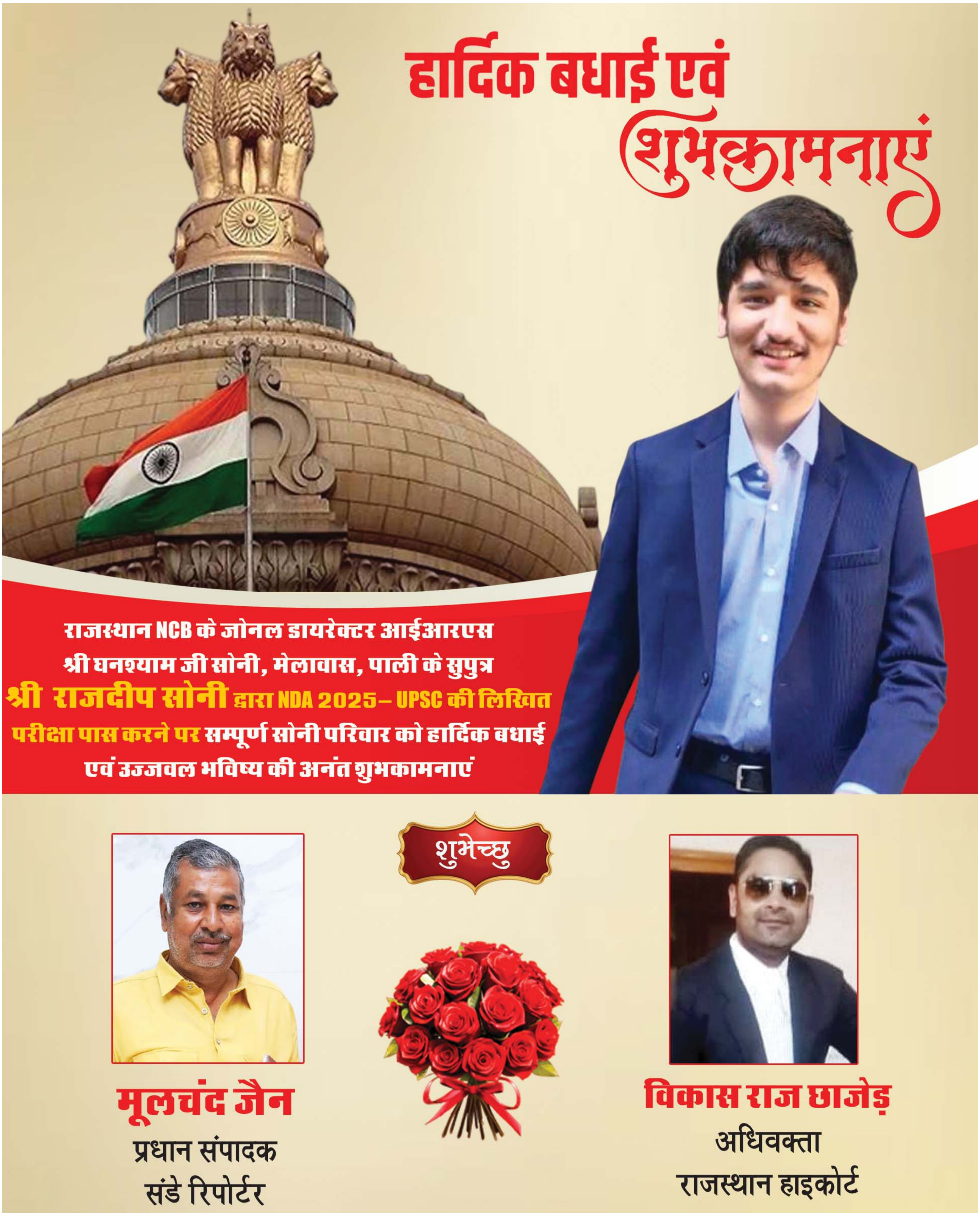
हार्दिक बधाई एवं
शुभकामनाएं
राजस्थान NCB के जोनल डायरेक्टर आईआरएस
श्री घनश्याम जी सोनी, मेलावास, पाली के सुपुत्र
श्री राजदीप सोनी द्वारा NDA 2025– UPSC की लिखित
परीक्षा पास करने पर सम्पूर्ण सोनी परिवार को हार्दिक बधाई
एवं उज्जवल भविष्य की अनंत शुभकामनाएं
शुभेच्छु
मूलचंद जैन
प्रधान संपादक
संडे रिपोर्टर
विकास राज छाजेड़
अधिवक्ता
राजस्थान हाइकोर्ट

राजस्थान नर्सेज एसोसिएशन के राज्यध्यक्ष चम्पालाल घारू ने मुख्यमंत्री व आयुष मंत्र से किया

बुटाटी धाम में आयुर्वेद चिकित्सालय खोलने का आग्रह

जोधपुर। राजस्थान आयुर्वेद नर्सेज एसोसिएशन ने मुख्यमंत्री व आयुष मंत्री से लकवाग्रसित बीमार रोगियों के लिये वरदान के रूप में विश्व प्रसिद्ध संत शिरोमणि चतुरदास जी महाराज के पावन पवित्र बुटाटी धाम नागौर में प्राथमिकता से राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय खोलने का आग्रह किया है।

SUNDAY रिपोर्टर

राजस्थान आयुर्वेद नर्सेज एसोसिएशन के राज्याध्यक्ष चम्पालाल घारू ने राजस्थान सरकार के मुख्यमंत्री एवं आयुष मंत्री से लकवाग्रसित बीमार रोगियों के लिये वरदानस्वरूप चमत्कारिक विश्व प्रसिद्ध तपोनिष्ठ चतुरदास जी महाराज की तपोभूमि नागौर जिले में कुचेरा के पास स्थित बुटाटी धाम पर लकवाग्रसित बीमार रोगियों के चिकित्सा लाभ के लिये प्राचीन भारतीय आयुष चिकित्सा पद्धति का प्राथमिकता से राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय खोलने की राजस्थान प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं आयुष मंत्री से मांग की है।

आमजन को मिल सकेगा लाभ

घारू ने बताया कि इन लकवाग्रसित बीमार रोगियों व आमजन को आयुर्वेद, योग एवं पंचकर्म चिकित्सा का लाभ तथा आयुष चिकित्सा पद्धति के प्रचार-प्रसार के लिए बुटाटी धाम पर राजस्थान सरकार समुचित सुविधाओं युक्त राजकीय आयुर्वेद चिकित्सालय खोलकर जनहित में लाभान्वित करवावे। इससे इस ऐतिहासिक धार्मिक धरोहर में लकवा की बीमारी से ग्रसित रोगियों सहित सभी बुटाटी धाम पर आने वालों श्रद्धालु भक्तजनों को आयुष चिकित्सा पद्धति का लाभ मिल सकेगा।

लकवाग्रस्त रोगियों के लिए वरदान

राजस्थान आयुर्वेद नर्सेज एसोसिएशन के राज्याध्यक्ष चम्पालाल घारू बताया कि संत चतुरदास जी महाराज का बुटाटी धाम जो कि लकवाग्रसित बीमार रोगियों के ठीक हो जाने के लिये जाना जाता है। यहां पर देश विदेश से लाखों-श्रद्धालु लकवा की बीमारी ठीक होने की उम्मीद लेकर आस्था के इस पावन धाम आते हैं। मान्यता हैं कि बुटाटी धाम पर संत चतुरदास जी महाराज की कृपा से बिना किसी दवाई के मंदिर के सात दिन तक सात फेरी देने एवं इस अखण्ड ज्योति की भभूत सरसों के तेल में मिलाकर मात्र रोगी के मालिश करने से लकवा की बीमारी ठीक हो जाती है। बुटाटी धाम में प्रतिदिन करीब चार हजार श्रद्धालुजनआते हैं तथा लकवा से ग्रसित सैकड़ों बीमार रोगी ठीक होकर सकुशल अपने घर जाते हैं। इन सभी बीमार रोगियों व इनके साथ आने वाले परिजनों के लिये बुटाटी धाम मंदिर ट्रस्ट की ओर से भोजन, आवास की समुचित व्यवस्थाएं निःशुल्क है।

'धणी' की भविष्यवाणी: राजनीतिक उठापटक व काल-सुकाल के संकेत

पूरे अनुष्ठान में कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिलने पर माना जाता है कि राजनीतिक उठापटक रहेगी और देश पर संकट आएगा। इससे यह भी संकेत मिलता है कि अकाल व सुकाल दोनों होंगे...

जोधपुर। अक्षय तृतीया पर जहां एक और विवाह शादियों की धूम रहती है, तो दूसरी ओर जोधपुर में एक अनूठी परपंरा से आने वाले एक साल का भविष्य जाना जाता है।

SUNDAY रिपोर्टर

जोधपुर के घांची समाज की हर वर्ष अक्षय तृतीया पर 'धणी' का आयोजन करने की परंपरा है। धणी ने इस वर्ष अक्षय तृतीया से अगली अक्षय तृतीया तक के समय के लिए कोई स्पष्ट संकेत नहीं दिए हैं। पूरे अनुष्ठान में कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिलने पर माना जाता है कि राजनीतिक उठापटक रहेगी और देश पर संकट आएगा। इससे यह भी संकेत मिलता है कि अकाल व सुकाल दोनों होंगे। यानी कहीं बारिश होगी और कहीं पर सूखा रहेगा। देश-दुनिया में भारी राजनीतिक उथल-पुथल रहेगी, भारत का युद्ध भी हो सकता है । लोगों का मानना है कि धणी के संकेत सही साबित होते हैं। वे बरसों से इस पर भरोसा करते आए हैं। इस बार अनुष्ठान के बाद दोनों बांस की पट्टिकाएं ऊपर-नीचे होती रहीं। काल और सुकाल, एक भी ऊपर शूल तक नहीं पहुंच पाई। जिससे पता चला कि कहीं काल, तो कहीं सुकाल रहेगा। अनुष्ठान में काल ने सुकाल को नीचे खींचा, तो कभी सुकाल ने अकाल को नीच खींचा। यह राजनीतिक उथल-पुथल के संकेत हैं। ऐसे में भारत के लिए युद्ध के संकेत भी दिखाई दे रहे हैं। पूरे अनुष्ठान में कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिलने पर राजनीतिक उठापटक और देश पर संकट की बात मानी जाती है।

यह है संकेत जानने का तरीका

धणी यानी सृष्टि के मालिक के संकेत जानने के लिए यज्ञ वेदी के पास खंभ स्थापित किया जाता है। खंभ के आमने-सामने दो अबोध बालकों को मंत्रोच्चार से पवित्र कर खड़ा किया जाता है। इन बालकों के हाथ में बांस पट्टिकाएं थमाई जाती हैं। मंत्रोचार व यज्ञ भी चलता रहता है। सुकाल का संकेत देने वाली बांस पट्टिका पर कुकुम लगाया जाता है, जबकि काल का संकेत देने वाली पर काजल। मंत्रोचार व जाप से बालकों में भाव आने से बांस पट्टियों में हलचल होती है। वे स्वतः उपर-नीचे होने लगती हैं। अंतत संकेत का पता चलता है। जिसकी घोषणा समाज के बुजुर्ग करते हैं। खंभ पर सूल (देशी बबूल का कांटा) लगा दिया जाता है। हवन के मध्य यदि कुमकुम लगी खप्पची सूल पर टिकती है, तो अच्छी वर्षा व देश में शांति की भविष्यवाणी की जाती है। वहीं काजल लगी खप्पची सूल से टकराती है और सूल टूट जाते हैं, तो इससे आपदा, विपदा, भ्रष्टाचार व राजनीतिक उथल-पुथल का संकेत माना जाता है।

इस बार विपदाओं के संकेत

सोजतिया बास समाज अध्यक्ष गंगाराम ने बताया कि बुधवार को धणी ने बांस पट्टियों से जो संकेत दिए हैं। उसके अनुसार इस बार हर तरह की उथल-पुथल रहेगी। क्योंकि दोनों पट्टियां बराबर रही हैं। सुकाल की पट्टी उपर नहीं गई है। इसलिए यह साल भारी रहेगा। यानी की फसलें आधी होंगी। ज्यादा बारिश नुकसान करेगी, तो कहीं पूरा सूखा रहेगा। सुशील सोलंकी ने बताया कि इस बार के संकेत बता रहे हैं कि युद्ध होकर रहेगा। कई तरह की विपदाएं आएंगी।

इसलिए शुरू हुई परंपरा

घांची समाज के बुजुर्गों के अनुसार पहले जब सबकुछ बारिश के पानी पर निर्भर था, तो आखातीज पर अगले एक साल तक के संकेत जानने के लिए धणी का आयोजन होता था। इससे मिले संकेत के आधार पर खेती की योजना बनाई जाती थी। आने वाली बरसात का पानी सुरक्षित रखना, पशुओं के लिए चारे का इंतजाम किया जाता था। अक्षय तृतीया पर धणी की तरह ही ग्रामीण क्षेत्रों में अलग-अलग तरीके के अनुष्ठान एक साल की स्थिति जानने के लिए होते हैं।

जोधपुर शहर में 6 मई को नहीं होगी जलापूर्ति

जोधपुर। गर्मी के मौसम को देखते हुए जल भंडारण और जोधपुर शहर के फिल्टर प्लांट, पम्प हाउस एवं पाइप लाइनों के रखरखाव एवं सफाई कार्य किया जाएगा । इससे 6 मई को जोधपुर शहर के समस्त फिल्टर हाउस से सभी क्षेत्रों में जलापूर्ति बंद रहेगी। कायलाना,चौपासनी एवं सुरपुरा फिल्टर हाउस से संबंधित क्षेत्रों में 6 मई को होने वाली जलापूर्ति 7 मई को और 7 मई को होने वाली जलापूर्ति 8 मई को की जाएगी।

7 और 8 मई को बदलेगा सप्लाई शेड्यूल, फिल्टर प्लांट व लाइन की होगी सफाई

SUNDAY रिपोर्टर

इन इलाकों में नहीं आएगा पानी: जलदाय विभाग की ओर से अधीक्षण अभियंता राजेन्द्र मेहता ने बताया कि झालामण्ड एवं तखतसागर फिल्टर हाउस से जुड़े क्षेत्रों जैसे सरस्वती नगर, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड के विभिन्न सेक्टर एवं पाल बाईपास, शिल्पग्राम के आसपास के क्षेत्रों में 6 मई को सुबह 10 बजे तक जलापूर्ति सामान्य रूप से की जाएगी। इन क्षेत्रों में 7 मई को की जाने वाली जलापूर्ति 8 मई को और 8 मई को की जाने वाली जलापूर्ति 9 मई को की जाएगी।

जल्द आएगा डेंगू का टीका अगले महीने पूरा होगा ट्रायल

जोधपुर। देश में डेंगू का पहला टीका अगले साल सामने आ सकता है। एम्स जोधपुर में टीके के तीसरे व अंतिम चरण का क्लिनिकल ट्रायल किया जा रहा है, जो अगले महीने तक पूर्ण हो जाएगा। ट्रायल के अंतर्गत एम्स में 18 साल से ऊपर वयस्कों का निःशुल्क डेंगू टीका लगाया जा रहा है। राजस्थान में केवल जोधपुर एम्स में ही डेंगू टीके का ट्रायल चल रहा है। एम्स, जोधपुर सहित देश के 18 अन्य शहरों में डेंगू टीके का ट्रायल किया जा रहा है। तीसरे चरण में कुल मिलाकर 10,335 वयस्कों को टीका लगेगा। टीका लगाने वाले लोगों का दो साल तक फॉलोअप किया जाएगा। डेंगू टीके के पहले व दूसरे चरण सफल रहे हैं।

SUNDAY रिपोर्टर

डेंगू वायरस के चार स्ट्रेन होते हैं और चारों अलग-अलग हैं। अगर किसी एक स्ट्रेन से डेंगू हो गया तो वह दूसरे स्ट्रेन के लिए प्रतिरोधी नहीं होता है इसलिए डेंगीऑल टीके में चारों स्ट्रेन का उपयोग किया गया है। डेंगीऑल के अलावा जापान की कम्पनी का क्यूडेंगा टीका भी अगले साल लॉन्च होने की तैयारी में हैं।

स्वदेशी टीका, प्रक्रिया पर मिला पेटेंट: आइसीएमआर और पैनेसिया बायोटेक ने स्वदेशी डेंगू वैक्सीन डेंगीऑल तैयार की है। वैसे मूल रूप से एक टेट्रावैलेंट डेंगू वैक्सीन एनआइएच, यूएसए ने तैयार की थी, जिसे भारत की तीन कम्पनियों को हस्तांतरित किया गया। पैनेसिया बायोटेक के परिणाम बेहतर रहे। कम्पनी ने इस स्ट्रेन पर काम करके खुद का एक पूर्ण विकसित वैक्सीन फॉर्मूलेशन विकसित कर लिया। इससे कंपनी को एक प्रक्रिया पेटेंट भी मिला है। क्लिनिकल ट्रायल को मुख्य रूप से आइसीएमआर और आंशिक रूप से पैनेसिया बायोटेक की ओर से वित्त पोषित किया गया है, जिसमें किसी बाहरी एजेंसी से कोई वित्तीय सहायता नहीं है।

रूपहले परदे पर किताबें

साहित्यिक कृतियों का परदे पर आना नई बात नहीं, लेकिन अब थ्रिलर और आपराधिक कहानियों का परदे पर...

जोधपुर। हाल के दौर में दुनिया भर में किताबों पर आधारित फिल्मों और धारावाहिकों का चलन बढ़ा है। यूं तो चर्चित किताबों और कहानियों पर हमेशा ही फिल्में बनाई जाती रही हैं, मगर इन दिनों किताबों पर बन रही फिल्मों के पीछे नए और ताजा कथानक की कमी दिखाई देती है, साथ ही कमाई की खातिर विवादास्पद विषयों को उठाने का चलन भी बढ़ा है। इस सिलसिले में थ्रिलर तथा अपराध कथाओं को फिल्माने का चलन भी तेज हुआ है। एक वजह तो यह है कि पहले से ही चर्चित किताबों पर बनी फिल्में दर्शकों को आसानी से खींचती हैं। दूसरी वजह यह है कि बनी-बनाई कहानी मिल जाती है

SUNDAY रिपोर्टर

जिस पर बहुत माथापच्ची नहीं करनी पड़ती है। कोरोना के बाद जिस तरह नई कहानियों का इंडस्ट्री में टोटा पड़ा है और सिनेमाघरों में आ रही फिल्में पिट जा रही हैं, फिल्मकार अब कहानी लिखवाने पर खर्च करने के बजाय रेडिमेड माल की खोज में हैं। ऐसे में किताबों पर बनी अपराध कथा, रोमांच कथा, जासूसी कथाएं ज्यादा दर्शक खींच रही हैं। आजकल विक्की कौशल अभिनीत छावा सुर्खियों में है। मराठी के प्रसिद्ध लेखक शिवाजी सावंत के उपन्यास छावा पर आधारित फिल्म में संभाजी महाराज का जीवन, संघर्ष और वीरता दिखाई गई है। इसी साल एक और कमाल की सीरीज आई है जिसका नाम ब्लैक वॉरंट है। यह वेब सीरीज एशिया की सबसे बड़ी जेल मानी जाने वाली तिहाड़ जेल के पूर्व जेलर सुनील कुमार गुप्ता और पत्रकार सुनेत्रा चौधरी की लिखी किताब ब्लैक वॉरंटः कन्फेशंस ऑफ ए तिहाड़ जेलर पर आधारित है। सीरीज में पहली बार जेहान कपूर परदे पर आए हैं, जो शशि कपूर के पोते हैं।

द नाइट मैनेजर

इसी साल विनीत कुमार सिंह, अनुजा साठे और मनोज जोशी की मुख्य भूमिका से सजी मैच फिक्सिंग नाम की फिल्म भी रिलीज हुई, जो पूर्व आर्मी इंटेलिजेंस ऑफिसर कर्नल कंवर खटाना की किताब द गेम बिहाइंड सैफ्रन टेरर पर आधारित है। यह फिल्म मालेगांव ब्लास्ट, कर्नल पुरोहित, अभिनव भारत, साध्वी प्रज्ञा और मुंबई हमले पर फोकस करती है। इस साल जनवरी में सत्यजीत राय की लिखी बंगाली लघुकथा गल्पो बोलिए तारिणी पर आधारित फिल्म द स्टोरीटेलर रिलीज हुई। फरवरी के अंत में रिलीज हुई वेब सीरीज क्राइम बीट दिग्गज निर्देशक सुधीर मिश्रा के सह-निर्देशन में बनी है। इसकी कहानी सोमनाथ बताब्याल की किताब द प्राइस यू पे पर आधारित है। यह दिल्ली के पत्रकारों, पुलिसकर्मियों और अपराध जगत के बीच मौजूद जटिल समीकरणों को उजागर करती है।

गांधी-गोडसे एक युद्ध

वर्ष 2023, 2024 और 2025 कई चुनिंदा किताबों पर आधारित फिल्मों और वेब सीरीजों के नाम रहा। 2023 की शुरूआत प्रसिद्ध लेखक और नाटककार असगर वजाहत के नाटक गोडसे@गांधी.कॉम पर आधारित फिल्म से हुई। गांधी-गोडसे एक युद्ध नाम से आई इस सीरीज को लेकर बहुत विवाद हुए। इसमें उठाए गए प्रश्नों की वजह से यह फिल्म असाधारण बन गई थी। नाथूराम गोडसे और गांधी के बीच संवाद के माध्यम से अखंड भारत का मुद्दा, अखंड भारत की परिकल्पना, भारत की बहुलतावादी संस्कृति, सांप्रदायिकता, भारत विभाजन जैसे तमाम विषयों पर यह फिल्म बात करती है। इसी साल एक और फिल्म आई जो एक ऐतिहासिक विषय पर लिखे उपन्यास पर आधारित थी। तमिल के विख्यात लेखक कल्कि कृष्णमूर्ति के लिखे प्रसिद्ध उपन्यास पर आधारित मणि रत्नम ने पोन्नियिन सेल्वन नाम से दो भागों में फिल्म बनाई जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। तमिल की प्रसिद्ध पत्रिका कल्कि में पोन्नियन सेल्वन की कथा धारावाहिक रूप में छपना शुरू हुई थी। पहली ही किस्त से पाठकों में इस धारावाहिक के प्रति अलग ही दीवानगी देखने को मिली। यह उपन्यास साढ़े तीन साल तक लगातार धारावाहिक रूप में छपा और पसंद किया गया। वह करीब ढाई हजार पन्नों का तमिल का सबसे बड़ा उपन्यास था। किताब के रूप में भी इसे तीन किस्तों में छापा गया।

स्कूप

फिल्म में चोल साम्राज्य की राजनीति, सत्ता संघर्ष, राजसी प्रेम और धोखे की गाथा थी, जो आदित्य करिकालन, पोन्नियन सेल्वन और वंदियत्थेवन जैसे पात्रों के माध्यम से चोल साम्राज्य के उत्कर्ष और उसके भीतर छिपी साजिशों को उजागर करती है। फिल्म का पहला भाग 2022 में रिलीज हुआ था।

किताब पर बनी फिल्मों की सूची में द वैक्सीन वॉर ने भी अपना नाम दर्ज किया। लेखक-निर्देशक विवेक अग्निहोत्री की यह फिल्म इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च (आईसीएमआर) के पूर्व महानिदेशक डॉ. बलराम भार्गव की किताब गोइंग वायरल- मेकिंग ऑफ कोवैक्सिनः द इनसाइड स्टोरी पर आधारित थी। यह फिल्म उन भारतीय वैज्ञानिकों की कड़ी मेहनत को उजागर करती है जिन्होंने कोविड-19 महामारी से निपटने के लिए दिन-रात कोशिश कर स्वदेशी वैक्सीन विकसित की। नेटफ्लिक्स पर आई वेबसीरीज जाने जां को भी खूब दर्शक मिले। जापानी उपन्यास द डिवोशन ऑफ सस्पेक्ट एक्स थ्रिलर था और सुजॉय घोष ने इसका भारतीयकरण कर खूबसूरती से इसे परदे पर उतारा। कीगो हिगाशिनो के इस उपन्यास में एक जासूस की कहानी है। इस रोमांचक कहानी में करीना कपूर, जयदीप अहलावत और विजय वर्मा ने जान डाल दी थी। इसी फिल्म से करीना कपूर ने ओटीटी की दुनिया में प्रवेश किया है।

द वैक्सीन वॉर

इसी तरह खुफिया ने भी दर्शकों का ध्यान खींचा। फिल्म की कहानी रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) के काउंटर एस्पियनेज यूनिट के पूर्व प्रमुख अमर भूषण के जासूसी उपन्यास एस्केप टु नोव्हेयर पर आधारित थी। अमर भूषण के जीवन की सच्ची कहानी पर आधारित इस उपन्यास को हालांकि काल्पनिक बताया गया, लेकिन लेखक-निर्देशक विशाल भारद्वाज ने बेहतरीन तरीके से इसे फिल्माया था। अमर भूषण बीएसएफ के खुफिया एजेंट, स्टेट स्पेशल ब्रांच और इंटेलिजेंस ब्यूरो में भी काम कर चुके हैं। कहानी के साथ-साथ इस फिल्म के कलाकारों की अदाकारी की भी खूब चर्चा हुई थी। विशेष रूप से तब्बू और वामिका गब्बी की शानदार एक्टिंग ने दर्शकों को बांधे रखा। यह सच है कि थ्रिलर फिल्मों का अपना अलग दर्शक वर्ग होता है लेकन सामाजिक फिल्मों के दर्शकों की भी कोई कमी नहीं रहती है। अनुराग पाठक के बेस्टसेलर उपन्यास 12वीं फेल पर इसी नाम से फिल्म बनी, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। 2005 बैच के मुंबई में तैनात सहायक पुलिस आयुक्त मनोज कुमार शर्मा की कहानी को विधु विनोद चोपड़ा ने जीवंत कर दिया। विक्रांस मैसी को इस फिल्म ने अलग पहचान दी। 2023 के जाते-जाते एक और फिल्म आई जो किताब पर आधारित थी, लेकिन यह फिल्म उतना असर नहीं डाल पाई जितनी अच्छी किताब थी। राजा कृष्ण मेनन ने ईशान खट्टर और मृणाल ठाकुर को लेकर पिप्पा बनाई लेकिन यह खास असर नहीं डाल पाई। यह फिल्म सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर बलराम सिंह मेहता की किताब द बर्निंग चैफीज पर आधारित थी। यह 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध की कहानी है। ब्रिटिश लेखक जॉन ले कैरे के जासूसी उपन्यास द नाइट मैनेजर पर आधारित इसी नाम से ओटीटी पर आई एक सीरीज ने खूब धूम मचाई थी। हथियार डीलर की इस कहानी को दर्शकों ने खूब पसंद किया था। इस उपन्यास पर सबसे पहले 2016 में ब्रिटेन में एक शो बना था। इसकी प्रसिद्धि ऐसी हुई कि उसके बाद दुनिया भर में कई भाषाओं में इस सीरीज को बनाया गया।

द तेलगी स्टोरी

जिग्ना वोरा की लिखी किताब बिहाइंड बार्स इन भायखलाः माइ डेज इन प्रिजन पर निर्देशक हंसल मेहता ने वेब सीरीज बनाई स्कूप। हंसल का कुशल निर्देशन और जागृति पाठक के किरदार में करिश्मा तन्ना ने कमाल कर दिया था। इसी तरह स्कैम 2003ः द तेलगी स्टोरी ने भी खूब धूम मचाई। टीवी पत्रकार संजय सिंह की चर्चित किताब तेलगी स्कैम- एक रिपोर्टर की डायरी पर बनी वेब सीरीज जालसाज अब्दुल करीम की जिंदगी पर आधारित थी, जो फर्जी सरकारी स्टॉम्प पेपर छापता था। इसे भी हंसल मेहता ने ही बनाया था।

द फ्रीलांसर वेब सीरीज भी किताब पर आधारित थी। क्राइम और थ्रिलर को पसंद करने वालों के लिए यह किसी सौगात से कम नहीं थी। द फ्रीलांसर लेखक शिरीष थोराट की किताब ए टिकट टू सीरिया पर आधारित है। इसका निर्देशन भाव धूलिया ने किया था। यह युद्ध से प्रभावित सीरिया में जबरदस्ती पकड़कर रखी गई युवा लड़की के बचाव अभियान की कहानी है। 2023 में ही किताब पर आधारित इस साल की पांचवीं वेब सीरीज बंबई मेरी जान आई। शुजात सौदागर के निर्देशन में बनी यह वेब सीरीज मशहूर पत्रकार और क्राइम राइटर एस हुसैन जैदी ने लिखी किताब पर आधारित है। निमार्ताओं का दावा था कि इसकी कहानी काल्पनिक है, लेकिन देखने वाले जान जाते हैं कि यह जैदी की किताब डोंगरी टु दुबई से प्रेरित है। कहानी 1970 के दशक की है जब कहा जाता था कि मुंबई (तब बंबई) पर सरकार से ज्यादा अंडरवर्ल्ड का राज चलता था। 2023 के समाप्त होने से पहले एक वेब सीरीज रिलीज हुई चार्ली चोपड़ा एंड द मिस्ट्री ऑफ सोलंग वैली। यह सीरीज अपराध कथाओं को रचने में माहिर अगाथा क्रिस्टी के जासूसी उपन्यास द सिटाफोर्ड मिस्ट्री पर आधारित है। इस सीरीज का निर्देशन और सह-निर्माण राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म निमार्ता विशाल भारद्वाज ने किया था। किसी भी महान साहित्यिक कृति को पर्दे पर उतारना हमेशा चुनौतीपूर्ण होता है। बॉलीवुड में थ्रिलर विधा के महारथी श्रीराम राघवन ने न केवल इस चुनौती को स्वीकार किया बल्कि अपनी निर्देशन प्रतिभा से मेरी क्रिसमस फिल्म को बेमिसाल रूप दिया। फिल्म ने न केवल अपने मूल उपन्यास की गहराई को जीवंत किया, बल्कि उसे नई ऊंचाई तक पहुंचाया। मेरी क्रिसमस लोकप्रिय फ्रांसिसी लेखक फ्रेडरिक दा के लिखे उपन्यास ला मोंटे चार्ज पर आधारित है। फिल्म की बारीकियों और इसके रहस्यात्मक पहलुओं ने सिनेमा की समझ रखने वाले दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया था। अनुजा चौहान की किताब क्लब यू टू डेथ पर आधारित होमी अदजानिया के निर्देशन में बनी फिल्म मर्डर मुबारक दिल्ली के मशहूर द रॉयल क्लब में हुई एक हत्या के इर्द-गिर्द घूमती है। फिल्म में एसीपी भवानी सिंह की भूमिका में पंकज त्रिपाठी का अभिनय कमाल का है। मशहूर लेखक जेरी पिंटो के चर्चित उपन्यास मर्डर इन माहिम पर आधारित आठ एपिसोड की वेब सीरीज भी दर्शकों की पसंद की सूची में अव्वल रही। विजय राज और आशुतोष राणा का दमदार अभिनय देखने लायक है।

Why क्लियर हो तो आसान हो जाती चीजें

देशसेवा के लिए छोड़ी मोटी सैलरी वाली जॉब- मिलिए 57 रैंक हासिल करने वाली लावण्या गौर से...

जोधपुर। 'कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं, अगर ये आदत बन जाए, तो सफलता ही तकदीर बन जाती है', देश के पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम की इन लाइनों को पूरी तरह से चरितार्थ किया है, लावण्या गौर ने, जिन्होंने यूपीएससी रिजल्ट 2024 में 57 रैंक हासिल की है। मेहनत को ही सफलता का मूल मंत्र मानने वाली लावण्या गौर ने संडे रिपोर्टर से बातचीत में अपनी सफलता और अपने अब तक सफर के बारे में खुलकर बात की। चौथे प्रयास में यूपीएससी क्रैक करने वाली लावण्या से पूछा गया कि आपकी सक्सेस का कारण क्या है? तो उन्होंने कहा कि 'इसमें कोई शक नहीं कि यूपीएससी का एग्जाम काफी टफ होता है और इसका सिलेबस भी काफी ज्यादा है लेकिन मेरा मानना है कि अगर आपका Why क्लियर हो तो आपके लिए चीजें आसान हो जाती हैं, आप उसे बोझ की तरह नहीं लेते हैं।

SUNDAY रिपोर्टर

आखिर ये Why क्या है?

तब लावण्या गौर ने कहा कि 'लोगों को आईएस क्यों बनना है? क्यों यूपीएससी क्रैक करना है? ये बात साफ होनी बहुत ज्यादा जरूरी है। हर किसी के इसके बारे में अलग-अलग कारण हो सकते हैं, मेरे केस में अगर बात की जाए तो मैंने कंप्यूटर साइंस में साल 2021 में इंदिरा गांधी टेक्निकल विवि से बीटेक किया है और उसके बाद मैंने फेसबुक और गूगल जैसे कंपनियों में एक साल जॉब भी की थी। नौकरी के दौरान मुझे कुछ बातों एहसास हुआ, दरअसल मुझे लोगों से बातें करना पसंद है, मैं उनकी समस्याओं को दूर करने की कोशिश करती हूं।

'मैं ग्राउंड में रहकर देश के लोगों के लिए कुछ कर सकती हूं'

'तब ही मैंने यूपीएससी के बारे में सोचा कि यही मुझे वो प्लेटफार्म देगा, जिससे मैं ग्राउंड में रहकर अपने देश के लोगों के लिए कुछ कर सकती हूं और थोड़ा सा भी अपना योगदान देकर देश के लिए कुछ कर पाऊं तो इससे अच्छा क्या होगा, ये तो पहला कारण था लेकिन दूसरा प्रमुख कारण मेरी बुआ हैं, जो कि मेरी आदर्श रही है, मेरी बुआ बैच 2001 की आईआरटीएस रही हैं, उन्होंने अपनी जर्नी के जरिए ये बताया है कि 'कैसे एक प्लेटफार्म खूबसूरत स्थान मुहैया कराता है, जिसमें आप लोगों की सेवा कर पाते हैं।'

फेसबुक-गूगल की मोटी सैलरी पैकेज को छोड़कर सिविल सेवा के बारे में कैसे सोचा?

इस सवाल के जवाब में लावण्या ने कहा कि 'कोई संदेह नहीं कि सैलरी पैकेज काफी अच्छा था लेकिन हर मंथ के एंड में सैलरी तो आ रही थी लेकिन खुशी नहीं हो रही थी, हमेशा लगता था कि अपनी नॉलेज का हमें बेहतर इस्तेमाल करना चाहिए , सैलरी बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन मेरे लिए वो मोटिवेटिंग फैक्टर नहीं था, मुझे लगता था कि अगर मेरी वजह से एक-दो इंसान के भी जीवन में सकारात्मक असर होता है तो मुझे संतुष्टी मिलेगी।'

लावण्या ने कहा कि 'साल 2021 से ही मैंने यूपीएससी के लिए तैयारी शुरू कर दी थी, फिर मुझे लगा कि जॉब के साथ मैं पढ़ाई नहीं कर पा रही हूं और इसलिए मैंने जॉब छोड़ दी, मैंने सेल्फ स्टडी की है, मैंने कोई कोचिंग सेंटर ज्वाइन नहीं किया। मैंने सारी तैयारी ऑनलाइन की है, इंटरनेट का बहुत फायदा हुआ । यूट्यूब से काफी कुछ सीखने को मिला।'

क्या सोशल मीडिया पढ़ाई में बाधा नहीं डालता है?

लावण्या ने कहा कि 'यूट्यूब बहुत सारी ज्ञान की बातें मुहैया कराता है, सोशल मीडया जैसे इंस्टा को मैंने भी डिएक्टिव कर दिया था, ये आप पर पूरी तरह से निर्भर करता है कि आप किसी भी चीज को कैसे यूज करते हैं।'

क्या कभी निराश होती थीं? कभी लगा कि हमसे नहीं हो पाएगा?

लावण्या ने कहा कि 'इस एग्जाम के लिए रणनीति होना बहुत जरूरी है, अपने सोर्सेज लिमिटेड रखने हैं और सबसे बड़ी बात निरंतरता आपको लगातार मेंटन करनी है। मैं नियमित तौर पर 7-8 घंटे पढ़ती थी और जब प्री या मेंस आते थे तो 10-12 घंटे हो जाते थे।

'हर किसी के पास एक हॉबी जरूर होनी चाहिए'

कभी-कभी लगता था ये बहुत कठिन है तो मेरा मानना है कि इस चीज से बाहर निकलने के लिए हर किसी के पास एक हॉबी जरूर होनी चाहिए और शारीरिक व्यायाम पर ध्यान देना चाहिए क्योंकि ये आपको मेंटली भी फिट रखता है। कोई भी 24 घंटे नहीं पढ़ सकता है, जैसे मैं भजन सुनती थी, फैमिली से बातें करती थीं, कुछ ना कुछ ऐसा करना चाहिए जो आपको खुशी दे, जिससे आपका तनाव कम हो आप कूल माइंड होकर पढ़ाई कर पाएं।'

पढ़ाई के अलावा क्या शौक है?

लावण्या ने हंसते हुए कहा कि 'मैं बहुत बड़ी फूडी हूं, जब मुझे थोड़ा सा तनाव होता था तो मैं बेकरी के आइटम या मीठा खाती थी, जिससे स्ट्रेस कम हो जाता था। मैं लॉग टेनिस को फॉलो करती हूं, मुझे भजन सुनना पसंद है, मुझे फैमिली और दोस्तों से बात करना पसंद है। सच कहूं तो नॉन यूपीएसएसी फ्रेंडस होना बहुत ज्यादा जरूरी है।'

शादी के बारे में क्या सोचा है?

लावण्या ने मुस्कुराते हुए बोला कि 'अभी तक तो पढ़ ही रहे थे, मैंने इस बारे में कुछ सोचा नहीं है, घरवाले चुनें या फिर मैं, मुझे लगता है कि जोड़ियां तो ऊपर से बनकर आती हैं, जब उसकी मर्जी होगी तो जैसी होनी होगी हो जाएगी।'

यूपीएससी की तैयारी करने वालों से क्या कहना चाहेंगी?

लावण्या ने कहा कि 'यूपीएससी की तैयारी करने वालों को ये समझना होगा कि यूपीएससी केवल एक एग्जाम है और उसे उसी की तरह देखना चाहिए, किसी भी चीज को जिंदगी से बढ़कर ना मानिए क्योंकि कभी-कभी आप इसे "Larger than life" बना देते हैं और इस वजह से इंसान को जब सफलता नहीं मिलती है तो वो डिप्रेशन में चला जाता है, ये नहीं होना चाहिए। हर किसी को ये समझना होगा कि हम 60-70 के दौर में नहीं जी रहे हैं, ये 2025 है, जहां चारों ओर बहुत सारे अवसर हैं।'

'बच्चे आधी जंग वहीं जीत जाते है, जहां उनके मां-बाप उनका साथ देते हैं'

'अगर आपने सारे प्रोसेस फॉलो किए हैं लेकिन किसी भी कारण से आपका सेलेक्शन नहीं हुआ है तो आप मान कर चलिए कि ऊपरवाला आपको इससे बेटर कुछ देने वाला है। मैं अभिभावकों और मां-बाप से भी एक बात कहना चाहती हूं कि उनका सपोर्ट बहुत जरूरी है, बच्चे आधी जंग वहीं जीत जाते है, जहां उनके मां-बाप उनका साथ देते हैं। सफलता से ज्यादा निराशा के वक्त मां-बाप का सपोर्ट बहुत जरूरी होता है।'

' देश में शांति का माहौल बनाए रखना हमारा भी नैतिक कर्तव्य'

पहलगाम हिंसा के बारे में लावण्या ने कहा कि 'ये एक घृणित अपराध है, जो भी हुआ है वो गलत हुआ है, एक धर्म विशेष को टारगेट करना हमारी संस्कृति है ही नहीं, ये निंदनीय है। पाकिस्तान के खिलाफ हमारी सरकार जो कुछ भी कर रही है।'

'इस घिनौनी हरकत से हमारे देश में सांप्रदायिक तनाव ना हों'

'वो सही है और पूरा भरोसा है कि हमारी सरकार इसे बहुत अच्छे से हैंडल करेगी, हमें ये समझना होगा कि इस घिनौनी हरकत से हमारे देश में सांप्रदायिक तनाव ना हों, देश में शांति का माहौल बनाए रखना हमारा भी नैतिक कर्तव्य है, जिन्होने भी अपने करीबी लोगों को इस हमले में खोया है, उनके लिए 'रेस्ट इन पीस' कहना बहुत छोटा है, उन सभी के लिए सभी को सहानुभूति है, सरकार इस बारे में उचित कदम उठाएगी, इसका विश्वास है।'

SUNDAY रिपोर्टर
OFF THE BEAT
जोधपुर 4 मई 2025
वर्षः 13 अंकः 51
मूल्यः 10 पृष्ठः 20
www.facebook.com/sundayreporter
Approved By Government of India
Email: sundayreporter123@gmail.com
Why क्लियर हो तो आसान हो जाती...

Page-ii

पुलिस और गुंडों के नेक्सस ने लील ली बेटी की जिंदगी

गाड़ी पर पानी के छींटे लगने के मामूली विवाद के बाद एक युवती की लज्जा भंग की व उसकी मां व भाई से मारपीट हुई। भाई-बहन को बुरी तरह नोंचा गया। इसकी शिकायत लेकर जब वे माता का थान पुलिस थाने गए तो पुलिस ने 9 घंटे बैठाए रखा। फिर आरोपियों को केवल शांतिभंग में पकड़ छोड़ दिया.. दहशत के माहौल से परिवार की बेटी इतने सदमे में आ गई कि उसने फांसी लगा कर ली खुदकुशी

आक्रोशित जोधपुराइट्स ने दिया धरना, आरोपियों गिरफ्तारी और थानाधिकारी के निलबंन तक नहीं उठाएंगे शव

जोधपुर। गाड़ी पर पानी के छींटे लगने के मामूली विवाद के बाद एक युवती व उसकी मां व भाई से मारपीट हुई। भाई-बहन को बुरी तरह नोंचा गया। इसकी शिकायत लेकर जब वे माता का थान पुलिस थाने गए तो पुलिस ने 9 घंटे बैठाए रखा। फिर आरोपियों को केवल शांतिभंग में पकड़ छोड़ दिया। आरोप है कि पुलिस के ऐसे सपोर्ट से आरोपियों के हौंसले इतने बुलंद हो गए कि उन्होंने पीड़ित परिवार को डराने के लिए उनके घर के बाहर एसयूवी दौड़ते हुए चक्कर लगाए। दहशत के माहौल से परिवार की बेटी इतने सदमे में आ गई कि उसने फांसी लगा खुदकुशी कर ली। सुसाइड नोट में पुलिस व पार्षद पर आरोपियों से सांठगांठ के आरोप लगाए। वहीं विरोध में परिवार व समाज के लोगों ने थाने का घेराव किया, फिर भदवासिया रोड जाम कर दी। वे आरोपियों की गिरफ्तार के साथ थानाधिकारी भंवरसिंह जाखड़ को सस्पेंड करने की मांग कर रहे हैं। तब तक शव नहीं उठाने की चेतावनी भी दी है।

SUNDAY रिपोर्टर

थाना में आठ घंटे बिठाकर रखा

दरअसल, 30 अप्रैल को कीर्ति नगर हुडको क्वार्टर निवासी बिंदुदेवी चौहान पत्नी डांवरराम घर का आंगन धो रही थी। तभी पड़ोसी की एसयूवी पर पानी के छींटे लग गए। इस पर पड़ोसी शंकरलाल विश्नोई, उनकी पत्नी, बेटे राजेंद्र उर्फ राज बावरला व विकास उर्फ विक्की बावरला आए और मारपीट करने लगे। मां को छुड़ाने आई बेटी कविता चौहान (26) और बेटे आनंद (20) को भी बुरी तरह पीटा। फिर बिंदुदेवी बेटी-बेटा के साथ सुबह 8:30 बजे माता का थान थाने गई। पुलिस ने एफआईआर के? लिए शाम 5:30 बजे तक बिठाकर रखा। थानाधिकारी भंवरसिंह जाखड़ ने कहा- सर्वर डाउन है। फिर घायलों को मेडिकल के लिए भेजा, पीछे से विक्की व राज को छोड़ दिया। आरोप है कि दोनों ने अपनी स्कॉर्पियो से उनके घर के बाहर चक्कर काटे। सदमे में शुक्रवार दोपहर 12:30 बजे कविता ने फांसी लगा ली। कविता निजी अस्पताल में नर्स थीं। उसके पिता नहीं हैं, 4 बहनें व एक भाई हैं।

खरोच के निशान

सुसाइड नोट के प्रमुख अंश- 100 दिन डरकर जीने से अच्छा एक दिन शेर की जिंदगी जी लूं...

मैं सबसे अपने घर वालों के लिए लड़ी, ताकि वो सुरक्षित रहे, पर घर वाले भी मेरा साथ नहीं दे रहे। इसलिए मेरा जाना ही ठीक है। सौ दिन डरकर जीने से अच्छा है मैं एक दिन शेर की जिंदगी जी लूं। इन लोगों ने मेरी छाती पर नाखून डाले, मेरी इज्जत पर बात आई। मुझे ऐसी लाइफ नहीं चाहिए, जातिवाद, छुआछूत और लोगों का गंदी नजर से देखना। ये राज विश्नोई, उसका भाई विक्की और उसकी मां ने बहुत परेशान किया। पुलिस वालों ने भी इनका सपोर्ट किया। पार्षद जानी देवी भी इनके सपोर्ट में है। मेरे पास पैसे नहीं कचहरी में केस लड़ने के, मैं अब और सहन नहीं कर सकती, वैसे भी अब नौकरी लग नहीं सकती कोर्ट केसों के चक्कर में, फैमिली में भी सपोर्ट नहीं है इन बदमाशों के डर से, क्या पता मेरे जाने से सब ठीक हो जाए। -जैसा कि कविता ने अपने सुसाइड नोट में लिखा

थानाधिकारी बोले-आरोपियों का कुछ नहीं होगा, पार्षद ने कहा- इनकी पहचान ऊपर तक है..: पीड़ित परिवार के अनुसार आरोपियों ने कविता की छाती, मुंह, भाई के हाथ पर नाखून से नोंचा, लज्जा भंग की, फिर भी थानाधिकारी जाखड़ ने लज्जा भंग या अन्य आपराधिक धारा की बजाय सिर्फ शांतिभंग में मामला दर्ज किया। पीड़ित परिवार ने थानाधिकारी जाखड़ व पार्षद जानीदेवी पर धमकाने के आरोप भी लगाए। उन्होंने बताया कि वारदात वाले दिन थानाधिकारी ने कहा कि इनका कुछ नहीं होने वाला, ये तो छूट जाएंगे, फिर क्या होगा। आरोपियों के पक्ष में पार्षद भी आई, कहा- इनकी पहचान ऊपर तक है। आपस में मामला रफा-दफा कर लो।

पुलिस थाने का धेराव, भदवासिया में रास्ता रोका

कविता की खुदकुशी के विरोध में परिजन और समाज लोगों ने शाम को माता का थान पुलिस थाने का घेराव किया। इन लोगों ने आरोपियों की गिरफ्तारी के साथ ही थानाधिकारी को सस्पेंड करने की मांग की। रात होने तक मांगों पर सुनवाई नहीं हुई तो प्रदर्शनकारियों ने भदवासिया स्कूल के पास रास्ता जाम कर दिया। शनिवार को भी भदवासिया स्कूल के पास रास्ता रोक कर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि जब तक हमारी मांगों पर कार्रवाई नहीं होती तब तक ना शव का पोस्टमार्टम करवाएंगे, ना ही शव उठाएंगे। पुलिस ने 4 जनों के खिलाफ आत्महत्या के लिए दुष्प्रेरित करने का मामला दर्ज किया है।